द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)

क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम

शैक्षणिक सत्र 2015–17

(As per NCFTE 2009 and Revised Two Years B.Ed NCTE 2014)

शिक्षाशास्त्र संकाय

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय

हरिद्वार, दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग, बहादराबार उत्तराखण्ड।

P.O. : BAHADARABAD (HARIDWAR)-249402

E-mail : bed@usvv.ac.in Website : www.usvv.ac.in

संयोजक– प्रो0 मोहनचन्द्र बलोदी (विभागाध्यक्ष)
पाठ्यक्रम निमार्ण समिति

दिनांक 24 व 25 जुलाई 2015 शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम निर्माण समिति

1. प्रो0 आर.सी. नौटियाल (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष) – हे0न0बहुगुणा गढ़वाल वि0वि0, श्रीनगर
2. प्रो0 आर.पी. पाठक (डीन शिक्षाशास्त्र विभाग)– श्री ला0ब0शा0रा0सं0विद्यापीठ, कटवारिया सराय
3. डॉ0 अमिता पाण्डेय भारद्वाज (उपाचार्य) – श्री ला0ब0शा0रा0सं0विद्यापीठ, कटवारिया सराय
4. प्रो0 आर0पी0 कर्मयोगी (विभागाध्यक्ष) – देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार
5. डॉ0 अरविन्दनारायण मिश्र (सहयाक आचार्य) –उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार
6. डॉ0 प्रकाशचन्द्र पन्त (सहायक आचार्य) – उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार
7. डॉ0 बिन्दुमती द्विवेदी (सहायक आचार्या) – उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार
8. डॉ0 ज्ञानेन्द्र कुमार (सहायक आचार्य) – उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

(प्रो0 मोहनचन्द्र बलोदी)
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र
संयोजक शि0शा0 पाठ्यक्रम
निर्माण समिति

कार्यवृत्त

रा0अ0शि0प0 रेगुलेशन 2014 के नये मानकानुसार दिनांक 24, 25 जुलाई 2015 को शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम निर्माण समिति (बी0ओ0एस0) बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विशेषज्ञों द्वारा विचार–विमर्श के उपरान्त निम्नलिखित निर्णय लिये गये–

– वर्तमान पाठ्यक्रम 2400 अंको का है, जिसे अगले बी0ओ0एस0 मे NCTE द्वारा निर्धारित अंको में रूपान्तरित में किया जा सकता है।
– द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की क्रियान्विति में सैद्धान्तिक के बजाय व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया जाय।
– वर्तमान निर्मित पाठ्यक्रम को शैक्षणिक सत्र 2015–17 में लागू करने की संस्तुति प्रदान की गई।
– समय सारणी में प्रत्येक वादन 01 घंटे का किया जाय।
– द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में निर्धारित EPC सहित प्रायोगिकी हेतु उचित समय सारणी में कलांश प्रदान किये जाय।
– सभी प्रश्नपत्र 100 अंक के जिसमे 75 बाह्य, 25 आन्तरिक मूल्यांकन होंगे। अंको का निर्धारण क्रेडिट के रूप में किया जाय।
– छात्रों को शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण हेतु दक्षताओं का विकास करने के अवसर प्रदान किया जाय।
– अग्रिम बी0ओ0एस0 बैठक में ''योग, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा'' को ''योगशिक्षा'' में परिवर्तित किया जा सकता है।
– विभागीय पत्रिका में छात्रों के लेख, कृतियाँ तथा प्रायोगिकी के रूप में कृत विर्मशी लेखों को सम्मिलित किया जायेगा। पत्रिका का कार्य प्रथम सेमेस्टर से प्रारम्भ होगा तथा विभाग द्वारा उसका प्रकाशन करके छात्रों को चतुर्थ सेमेस्टर में वितरित किया जाय।
– किसी विद्यालय/शैक्षिक संस्थान का शैक्षिक भ्रमण अनिवार्य होगा।
– सत्र 2014–15 में असफल विद्यार्थियों की परीक्षा प्रथम सेमेस्टर के साथ होगी, जिसमें प्रश्नपत्र पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार होगा।
– अनुत्तीर्ण छात्र पुनः परीक्षा दे सकता है, जिसमें प्रथम सेमेस्टर में असफल विद्यार्थी तृतीय सेमेस्टर के साथ, द्वितीय सेमेस्टर में असफल विद्यार्थी चतुर्थ सेमेस्टर के साथ, तृतीय सेमेस्टर में असफल विद्यार्थी चतुर्थ सेमेस्टर में परीक्षा देने का प्रावधान हो।
– कोर्स के सभी प्रश्नपत्रों में उत्तीर्ण होने के लिए छात्र को एक वर्ष का अतिरिक्त समय दिया जायेगा।
– प्रवेश समिति के निर्णय के आधार पर फीस निर्धारण किया जाय।
– भाषा शिक्षण का पठन–पाठन एवं परीक्षा उसी भाषा के माध्यम से किया जाय।
– शास्त्र शिक्षण एवं संस्कृत शिक्षण का पठन–पाठन एवं उसकी परीक्षा संस्कृत भाषा के माध्यम से अनिवार्य रूप में किया जाय।
– पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य प्रश्नपत्रों के अनुदेशन एवं परीक्षा का माध्यम संस्कृत/हिन्दी भाषा में किया जाय।
–शिक्षाशास्त्र संकाय'' के स्थान पर ''शिक्षा संकाय'' (faculty of Education) नाम किया जाय तथा इसके अन्तर्गत शिक्षाशास्त्र विभाग आयेगा।

– भविष्य में योग शिक्षा प्राकृतिक शिक्षा ''प्रौढ़शिक्षा समावेशी शिक्षा'' आदि जैसे शिक्षा से जुड़े अन्य विभागों का समावेश इस संकाय के अर्न्तगत किया जा सकता है।
– शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा बाह्य विद्वानों के सहयोग से नवीन पाठ्यक्रम आधारित प्रश्न बैंक तैयार किया जाय।
– नवीन पाठ्यक्रम के सुचारू संचालन हेतु एक सप्ताह के अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया जाय।
– रा0अ0शि0प0 रेगुलेशन 2014 के अनुसार योग शिक्षा, समावेशी शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, जेण्डर एजुकेशन पर विशेष बल दिया गया। अतः इसे शिक्षा संकाय के अन्तर्गत विभागों के रूप में समाहित किया जाय। त्रिवर्षीय एकीकृत बी0एड0, एम0एड0 पाठ्यक्रम शुरू किया जाय।
– समय–समय पर संस्कृत जगत एवं शिक्षाशास्त्र के मूर्धन्य विद्वानों के व्याख्यानों को स्मारिका में प्रकाशित किया जाय। (पूरे विश्वविद्यालय के लिए)
– शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर मे कम से कम एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन छात्रों हेतु अवश्य किया जाय।
–शिक्षाशास्त्री के प्रतिभाशाली छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाय।
– द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में निर्धारित शैक्षिक गतिविधियों का प्रलेखन अवश्यक रूप में विभाग द्वारा किया जाय।
–द्विवर्षीय निर्मित शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम की क्रियान्विति परीक्षणार्थ है तथा इसका पुनरावलोकन अनुभूत कठिनाईयों तथा रा0अ0शि0प0 मानको के परिप्रेक्ष्य में वार्षिक आधार पर किया जाय।
– शास्त्र शिक्षण के पाठ्यक्रम को और अधिक समृद्ध किया जाय।

(प्रो. आर.सी. नौटियाल)	(प्रो. आर.पी. पाठक)	(डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज)	(प्रो. मोहनचन्द्र बलोदी)
भू.पू. विभागाध्यक्ष	डीन शिक्षाशास्त्र	उपाचार्य	विभागाध्यक्ष/संयोजक
ला.ब.शा.सं.विद्यापीठ	हे0न0ब0वि0वि0ग0	ला.ब.शा.सं.विद्यापीठ	उ0सं0वि0वि0 हरिद्वार

(डॉ. अरविन्दनारायण मिश्र)	(डा.प्रकाशचन्द्रपन्त)	(डॉ.बिन्दुमति द्विवेदी)	(डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार)
असि0 प्रोफेसर	असि0 प्रोफेसर	असि0 प्रोफेसर	असि0 प्रोफेसर

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्क्रम

उद्देश्य–

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यामिक स्तरों की शिक्षा हेतु संस्कृत अध्यापक तैयार करता है। इस पाठ्यक्रम के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्यों का उल्लेख निम्नाकिंत है–

छात्राध्यापकों को–

–शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्यों से परिचित कराना।

–अधिगमकर्त्ता के मनोविज्ञान की महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं को आत्मसात कराना।

–शिक्षण अधिगम में तकनीकी के प्रयोग की दक्षता विकसित कराना।

–समसामायिक भारत में शिक्षा की नीतियों एवं समस्याओं के प्रति समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

–शास्त्र शिक्षण की विधियों के प्रयोग हेतु अपेक्षित स्तर की क्षमता विकसित करना।

–शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन के महत्त्वपूर्ण सम्प्रत्यों के प्रयोग की क्षमता विकसित करना।

–विद्यालय प्रबन्धन सम्बन्धित क्षमताओं का विकास कराना।

–विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं का क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा समाधान करने की क्षमता में संवर्द्धन करना।

–संस्कृत शिक्षण के विभिन्न पाठों की शिक्षण विधियों में पारंगत कराना।

–विद्यालय स्तर पर अध्यापित अन्य विषयों तथा अंग्रेजः सामाजिक अध्ययन, हिन्दी एवं गणित के शिक्षण में दक्षता विकसित कराना।

–विद्यालय स्तर पर आध्यापित संस्कृत व अन्य विषयों तथा अंग्रेजी, सामाजिक अध्ययन, हिन्दी एवं गणित के शिक्षण का वास्तविक परिस्थितियों में अभ्यास प्रदान करना।

–पर्यावरण शिक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण सप्रत्ययों से अवगत कराना।

–शिक्षा के सन्दर्भ में मूल्यों को पहचानना एवं व्यवहारिक रूप में आत्मसात कराना।

–कम्प्यूटर से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रत्ययों को जानना एवं एम.एस.ऑफिस के शैक्षिक प्रयोग की क्षमता विकसित कराना।

–योग एवं स्थास्थ्य शिक्षा की शैक्षिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में अवबोध विकसित कराना।

–शिक्षा से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों तथा निर्देशन, लैगिकता मानवाधिकारों आदि से अवगत कराना।

–समावेशित शिक्षा, सुविधा वंचित वर्गो की समस्याओं के सन्दर्भ में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम स्वरूप

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम 2400 अंक एवं 96 क्रेडिटस का है जिसकी क्रियान्वियति चार सेमेस्टरों में होगी। प्रत्येक सेमेस्टर 600 अंक एवं 24 क्रेडिटस का होगा। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत चार मुख्य घटक – सैद्धान्तिक, प्रायोगिक, विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण एवं शैक्षिक गतिविधियां है। सैद्धान्तिक घटक में कोर्सेज एवं प्रायोगिक में 4 कोर्सेज है। इन मुख्य घटकों में कोर्स, उनकी संख्या, अंक एवं क्रेडिटस का निर्धारण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

कुल अंक – 2400
कुल क्रेडिटस–**96+8***

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम के घटक एवं कोर्स का स्वरूप

मुख्य घटक	कोर्स के नाम	कोर्स की सख्या	कुल अंक	कोर्स क्रेडिट	कुल क्रेडिटस एवं अक
सैद्धान्तिक Theory	1.सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य 2.संकेन्द्रिक अनिवार्य 3.संकेन्द्रिक वैकल्पिक 4.संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र 5.संकेन्द्रिक अनिवार्य शिक्षणशास्त्र	3 8 1 2 1	300 800 100 200 100	12 32 04 08 04	60 (1500 अंक)
(बी) प्रायोगिक–ई.पी.सी.	.संकेन्द्रिक प्रायोगिक	4	400	16	16 (400 अंक)
(सी) विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण	.संकेन्द्रिक शिक्षणाभ्यास	–	500	20	20 (500 अंक)
(डी) शैक्षिक गतिविधियां		4	200	08′	

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम संरचना का प्रारूप

कुल अंक– 2400कुल क्रेडिटस–**96+ 8***

कोर्स कोड	कोर्स की नाम	कुल अंक	केडिटस	कोर्स की सं.	कुल केडिटस
	प्रथम सेमेस्टर	600			
101–102 103–104 105 111	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective) संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory) संकेन्द्रिक अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Core Compulsory pedagogy) प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	200 200 100 100	04 04 04 01	02 02 01 04 (i-iv)	08 08 04 04
	द्वितीय सेमेस्टर	600			24
121 122–123 124–125 131	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective) संकेन्द्रिक अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Core Compulsory pedagogy) संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Elective pedagogy) प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	100 200 200 100	04 04 04 01	01 02 02 04 (i-iv)	04 08 08 04
	तृतीय सेमेस्टर	600			24
141 151	विद्यालय सम्बद्धता बाह्य (योगात्मक मूल्यांकन)–400 अंक आन्तरिक (संरचनात्मक मूल्यांकन)–200 अंक प्रायोगिक – ई.पी.सी	500 100	 01	 04	20 04
	चतुर्थ सेमेस्टर	600			24
161–164 165 171	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory) संकेन्द्रिक वैकल्पिक (Core Elective) प्रायोगिक – ई.पी.सी	400 100 100	04 04 01	04 01 (i-vii) 04 (i-iv)	16 04 04
112,132,152, 172	शैक्षिक गतिविधयां 80%उपस्थिति अनिवार्य	200	02	04	08

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्विवर्षीय पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – प्रथम सैमेस्टर कुल अंक– 600

कुल क्रेडिटस–**24 + 2***

क्र0सं0	कोर्स सं	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिटस	घण्टे सप्ताह	घण्टे / सेमेस्टर
		सैद्धान्तिक		500	20	20	400
101	1	शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य Philosophical and Social Perspectives of eduaction	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
102	2	अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान Psychology of Learning & Development	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
103	3	शिक्षण अधिगम की तकनीकी Technology of Teaching learning	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
104	4	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व School Management & Leadership	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
105	5	संस्कृत शिक्षण teaching of Sanskrit	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
III		प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08	160
(i) (ii) (iii) (iv)		1. संस्कृत सम्भाषण 2. संस्कृत शिक्षण पर आधारित पाठ योजना निर्माण। 3. मनोविज्ञान परीक्षण 4. पाठ्यवस्तु का पठन एवं चिन्तन		40 20 20 20			
112		शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	=80% Attendance	
(i) (ii) (iii) (iv) (v)		संस्कृत सप्ताह स्वच्छता अभियान खेल–कूद सांस्कृतिक कार्यक्रम कला सम्बन्धित गतिविधियां					

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – द्वितीय सैमेस्टर कुल अंक– 600 कुल क्रेडिटस–**24+2***

क्र0सं0	कोर्स सं	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिटस	घण्टे सप्ताह	घण्टे / सेमेस्टर
		सैद्धान्तिक		500	20	20	400
121	6	अधिगम आकलन	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
122	7	समसामयिक भारत एवं शिक्षा	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
123	8	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसन्धान	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
124	9	शास्त्र शिक्षण (कोई एक)	संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Core Elective Pedagogy)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
	9-i 9-ii 9-iii 9-iv 9-v 9-vi	ज्योतिष शिक्षण teaching of साहित्य शिक्षण दर्शन शिक्षण व्याकरण शिक्षण वेद शिक्षण कर्मकाण्ड शिक्षण		100			
125	10	अन्य विद्यालयीय विषय शिक्षण (कोई एक)	संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Core Elective Pedagogy)	75(E)+25(1)	4	4	80
	10-i 10-ii 10-iii 10-iv 10-v	अंग्रेजी शिक्षण हिन्दी शिक्षण सामाजिक शिक्षण गणित शिक्षण अर्थशास्त्र / इतिहास / भूगोल / राजनीतिविज्ञान शिक्षण					
I31		प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08	160
	(i) (ii) (iii) (iv)	सूक्ष्म शिक्षण द्वारा कौशलों का विकास शास्त्र एवं अन्य विषय शिक्षण पर आधारित पाठयोजना निर्माण एवं अनुरूपित रूप में प्रस्तुतिकरण शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण विद्यालय सम्बद्धता शिक्षण आधारित विमर्शी प्रतिवेदन निर्माण–दो सप्ताह		40 20 20 20			
132		शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	=80% Attendance	
	(i) (ii) (iii) (iv) (v)	स्लोंगन लेखन प्रतियोगिता स्वच्छता अभियान परिसर आधारित नुक्कड़ नाटक सांस्कृतिक कार्यक्रम क्रीड़ा एवं खेल–कूद					

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – तृतीय सैमेस्टर

कुल अंक– 600

कुल क्रेडिटस–**24+2***

क्र0सं0	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिटस	घण्टे / सेमेस्टर
141	विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण		500	20	18 सप्ताह
	बाह्य (योगात्मक मूल्यांकन) –400 आन्तरिक (सरचनात्मक मूल्याकन)–100	संकेन्द्रिक शिक्षणाभ्यास (Core Teaching Practice)	500		18 सप्ताह – शिक्षणाभ्यास
I51	प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08 160
i ii iii iV	क्रियात्मक अनुसन्धान आधारित परियोजना विद्यालय आधारित गतिविधियों में प्रतिभाग एवं प्रतिवेदन लेखन सहपाठी कक्षा–शिक्षण निरीक्षण विद्यालय पार्श्वचित्र		40 20 20 20		
152	शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	= 80 % Attendance
I ii iii	स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण। विद्यालय शिक्षकों द्वारा विशिष्ट व्याख्यान अभिभावक शिक्षक बैठक				

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम

चतुर्थ सैमेस्टर कुल अंक– 600 कुल क्रेडिट्स–**24+2 ***

क्र0सं0	कोर्स	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिट स	घण्टे सप्ताह	घण्टे / सेमेस्टर
		Theoryसैद्धान्तिक		500	20	20	400
161	11	पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4 4	4 4	80 80
162	12	मूल्य शिक्षा एवं व्यावसायिक आचार (Value EducationProfessional Ethics)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
163	13	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग (Aplicationof ICT)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
164	14	योग, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (Yoga health & PhysicalEducation)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
165	15	निम्नलिखि में से कोई एक	संकेन्द्रिक वैकल्पिक	100 75(E)+25(1)	4	4	80
165–1	15–1	(Any one of the following)	(Core Elective)				
165–2	15–2	समावेशित शिक्षा (inclusive education)					
165–3	15–3	निर्देशन एवं उपबोधन (guidznce counseling)					
165–4	15–4	जेन्डर, विद्यालय एवं समाज					
165–5	15–5	(gender, school, society					
165–6	15–6	आर्ट शिक्षा (art education) मानवाधिकार शिक्षा (human rights education)					
171		प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई. पी.सी.	100	04	08	160
(i)		सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का समीक्षात्मक अवबोध आधारित कार्य		40			
(ii)		विमर्शी संगोष्ठी / शिक्षकों के व्यवसायिक आचार पर आधारित कार्यशाला।		20			
(iii)		विभिन्न आसन / योग / आत्म अवबोध।		20			
(iv)		क्षेत्र आधारित सामुदायिक कार्य		20			
172		शैक्षिक गतिविधियांEducational Activities	Compulsory	50	2′	=80% Attendance	
(i)		विभागीय पत्रिका					
(ii)		Foundatuon Cours by Woman Studies Center					
(iii)		आर्ट गैलरी का / शैक्षिक भ्रमण।					
(iv)		क्रीडा एवं खेल–कूद।					
(v)		सांस्कृतिक कार्यक्रम					
(vi)		आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण					

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम क्रियान्वयन विधियाँ

द्विवर्षीय (शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जायेगा, विशेषकर संवादपरक व्याख्यान विधि । इसके साथ–साथ जिन अन्य क्रियान्वयन विधियों का प्रयोग पाठ्यक्रम के सम्पादन हेतु किया जायेगा उनका उल्लेख निम्नलिखित है–

परिचर्चा– इस पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में परिचर्चा विधि का भी प्रयोग दो प्रकार से किया जायेगा–युग्म परिचर्चा एवं समूह परिचर्चा। युग्म परिचर्चा के अन्तर्गत छात्रों के युग्म (जोड़े) बनाकर तथा समूह परिचर्चा में कक्षा को छोटे समूहों में बाटकर शिक्षक द्वारा दिये गये विषय पर चर्चा करवाकर सम्पन्न किया जायेगा। इससे छात्रों में विषय का संश्लेषण, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने से सम्बन्धित दक्षताओं का विकास होगा।

दत्त कार्य– इस विधि का प्रयोग छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति हेतु किया जायेगा। जिसमें मुख्य रूप से विषय का अवबोध, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन तथा समीक्षा से सम्बन्धित क्षमताओं का विकास किया जायेगा।

प्रश्नोत्तरी– इस विधि का प्रयोग इकाई समापन एवं कक्षा शिक्षण के समय किया जायेगा। जिसमे इकाई एवं शिक्षण विषय से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ प्रश्न अध्यापक द्वारा कक्षा छात्रों के विभिन्न समूहों के समक्ष प्रस्तुत करके प्रतियोगिता के रूप में आयोजित किया जायेगा।

विचारावेश– इस रचनाकौशल का प्रयोग छात्रों मे समस्या के सृजनात्मक समाधान हेतु किया जाता है। अतः इस पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं पर कक्षा स्तर पर इसका प्रयोग किया जायेगा।

इकाई परीक्षण– पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित इकाईयों के समापन के पश्चात वस्तुनिष्ठ एवं लघुत्तरीय प्रश्नों पर आधारित मौखिक या लिखित परीक्षण छात्र के अवबोध परीक्षण हेतु किया जायेगा।

परियोजना विधि– इस विधि द्वारा पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान पर आधारित परियोजना निर्माण किया जायेगा।

सैद्धान्तिक पत्रों हेतु प्रश्नपत्र का स्वरूप

कुल अंक –100

75 अंक – बाह्य (लिखित परीक्षा)

25 अंक – आन्तरिक (सत्रीय कार्य)

लिखित परीक्षा हेतु प्रश्नपत्र स्वरूप

प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक/प्रश्न	कुल अंक
(क) अनिवार्य	लघु –उत्तरीय	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न)	2 अंक/प्रश्न	5 (प्रश्न) X 2(अंक)–10
		5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न)	3 अंक/प्रश्न	5 (प्रश्न) X 3(अंक)–15
(ख) आन्तरिक	दीर्घ–उत्तरीय	5 (प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न–10)	10 अंक/प्रश्न	5 (प्रश्न) X 10(अंक)–50
			कुल अंक–	75 अंक

ग्रेड प्रणाली मूल्यांकन

SGPA और **CGPA** द्वारा छात्र निष्पात्तियों का सेमेस्टर में मूल्यांकन का स्वरूप

अंक प्रसार	ग्रेड	ग्रेड पाइन्ट
90–100	s	10
80–89	A	9
70–79	B	8
60–69	C	7
50–59	D	6
40–49	E	5
Pass with Grace Point	P	4
0-39	F	0
Non-Apperences in Examination (Incomplete)	I	–
Compulsory Course	z	

SGPA*-Semester Grade Point Average का गणना सूत्र

SGPA- Where Ci = No. of Credits assigned of i course of a semester
Pi= Grade point earned in the I course.
I= 1----------n, represent no. of courses in which student is registere in the concerned semester.

CGPA*-CumulativeGrade Point Average का गणना सूत्र

CGPA-Where Cj = No. of Credits assigned of j course of a semester for which CGPA is to be calculated
Pj= Grade point earned in the j course.
j= 1----------m, represent no. of courses in which student is registere from the 1st semester to the semester for which CGPA in to be calculated.

*SGPAएवंCGPA को दो दशमलव स्थान तक गणना करनी चाहिए।

श्रेणीी निर्धारण–

CGPA	श्रेणी (**Division)**
8.5 & above	**First division with distinction**
6.5& above but below 8.5	**First division**
5.0& above but below 6.5	**Second division**
4.0& above but below 5.0	**Third division**

CGPA को सम्बन्धित अंक प्रतिशत में परिवर्तित करने का सूत्र

X= 10 Y- 4.5 **Where X=** अंक प्रतिशत
Y=CGPA

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम

प्रथम सेमेस्टर

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्विवर्षीय पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – प्रथम सैमेस्टर कुल अंक– 600

कुल क्रेडिटस–**24 + 2***

क्र0सं0	कोर्स सं	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिटस	घण्टे सप्ताह	घण्टे / सेमेस्टर
		सैद्धान्तिक		500	20	20	400
101	1	शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य Philosophical and Social Perspectives of Eduaction	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
102	2	अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान Psychology of Learning & Development	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
103	3	शिक्षण अधिगम की तकनीकी Technology of Teaching Learning	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
104	4	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व School Management & Leadership	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
105	5	संस्कृत शिक्षण teaching of Sanskrit	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
III		प्रायोगिक – ई.पी.सी. practicum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08	160
(i) (ii) (iii) (iv)		5. संस्कृत सम्भाषण 6. संस्कृत शिक्षण पर आधारित पाठ योजना निर्माण। 7. मनोविज्ञान परीक्षण 8. पाठ्यवस्तु का पठन एवं चिन्तन		40 20 30 20			
112		शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	=80% Attendance	
(i) (ii) (iii) (iv) (v)		संस्कृत सप्ताह परिसर आधारित स्वच्छता अभियान खेल–कूद सांस्कृतिक कार्यक्रम कला सम्बन्धित गतिविधियां					

1. शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

(**Philosophical and Sociological Perspective of Education**)

कोर्स कोड–101 कुल क्रेडिटस–04

क्रिन्यान्वयन घण्टे–04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

- प्रमुख दार्शनिक विचारधाराओं तथा शिक्षा पर उनके प्रभाव से परिचित कराना।
- आधुनिक भारत तथा विश्व समाज के संन्दर्भ में शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों से अवगत कराना।
- भारतीय तथा पाश्चात्य विचारकों के शैक्षिक योगदान के समीक्षात्मक अध्ययन हेतु परिप्रेक्ष्य विकसित करना
- सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक गतिशीलता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज की समस्याओं के विश्लेषण हेतु परिप्रेक्ष्य विकसित करना।
- राष्ट्रीय एकता और अर्न्तराष्ट्रीय सद्भावना को प्रोन्नत करने की अवधारणा को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समझ सकने में मदद करना।
- पाठ्यक्रम योजना– विकास तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के केन्द्रिक पाठ्यक्रम और एन.सी.एफ. 2008 के बार में जानकारी के आधार पर चिन्तन परिप्रेक्ष्य विकसित करना।

पाठ्य– वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई – 1: शिक्षा के स्वरूप –अर्थ एवं अवधारणा, वैदिक, बौद्ध और मुस्लिम शिक्षा। विश्व एवं भारतीय समाज के सन्दर्भ में आधुनिक शिक्षा की अवधारणा। शिक्षा को प्रभावित करने वाला तत्वः दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक, अभिकरण – घर, विद्यालय एवं समुदाय – आधुनिक सन्दर्भ में इनकी भूमिका आधारित परिचर्चा।

इकाई –2 : शिक्षा और दर्शन – शिक्षा दशर्न का पारस्परिक संबंध, प्रमुख दार्शनिक विचारधाराएं उनकी विशेषताएं और उनका शिक्षा पर प्रभाव । भारतीय दार्शनिक स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द एवं महात्मा गांधी एवं दयानन्द सरस्वती के विशेष संदर्भ में। शिक्षादर्शन के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों , शिक्षण– अधिगम की युक्तियों , शिक्षक – छात्र सम्बन्ध एवं समुदाय की भूमिका एवं समीक्षात्मक विश्लेषण।

इकाई – 3 शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन –सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक नियत्रंण में शिक्षा की भूमिकाः भारतीय समाज में उपलब्ध असमानताओं एवं उनके प्रभावों का आकलन, लिंग, आर्थिक परिस्थिति एवं सामाजिक–सांस्कृतिक सन्दर्भों में दृष्टिगत समास्याएं एवं सामाजीकरण आधुनिकीकरण एवं वैश्विकीकरण में शिक्षा का योगदान।

इकाई – 4 राष्ट्रीय एकता एवं अन्तराष्ट्रीय सद्भावना– अर्थ, सम्प्रत्यय, राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व, भारतीय एकता के उन्नयन में शिक्षा का दायित्व, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता संबंधी चुनौतियां। वैश्विक सन्दर्भ में नैतिक शिक्षा और मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका। भारतीय सन्दर्भ में प्रेक्षित विशिष्ट मुद्दे एवं उन पर चर्चा।

इकाई – 5 पाठ्यचर्चा– अर्थ, संरचना तथा विकास, प्रकार और निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त, पाठ्यचर्चा विकास के केन्द्रिक अनुक्षेत्र (राष्ट्रीय शिक्षानीति 1986 के संदर्भ में) तथा एन0सी0एफ0 2005 क्रियान्विति से सम्बन्धित समस्याएं एवं उनका समाधानः परिचर्चा के आधार पर।

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से किन्ही दो पर प्रस्तुतीकरण एवं परिचर्चा आयोजित करना।

1. व्याख्या, सेमिनार, प्रस्तुतीकरण, वादविवाद (दार्शनिकों, कतिपय चयनित भारतीय शिक्षविदों पर)
2. जिम्मेदार नागरिका की तैयारी हेतु अध्यापक की भूमिका।
3. शिक्षा और लोकतन्त्र, शिक्षा और मूल्य परिचर्चा आधारित संवाद।
4. शिक्षा के शाश्वत मूल्य।
5. राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के उन्नयन में शिक्षा की भूमिका पर आधारित संगोष्ठी।

2. अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान

कोर्स कोड–102 कुल क्रेडिटस–04
क्रियान्वयन घण्टे–04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति, क्षेत्र, महत्व तथा विधियों से अवगत कराना।

–किशोरावस्था के विशेष सन्दर्भ में मानव वृद्धि एवं विकास की विभिन्न अवस्थाओं तथा प्रकारों का निहितार्थ समझाना।

–अधिगम सिद्धान्तों के सन्दर्भ में अधिगम की वास्तविक प्रक्रिया से परिचित कराते हुए अभिप्रेरण के साथ इसका सम्बन्ध स्पष्ट करना।

–बुद्धि तथा इसके सिद्धान्त, बुद्धि मापन तथा विशिष्ट बालकों एवं उनकी विशेषताओं तथा शिक्षण व्यवस्था हेतु निहितार्थ का अवबोध कराना।

–व्यक्तित्व की प्रकृति, विकास और व्यक्तिगत विभिन्नताओं से अवगत कराते हुए मानसिक स्वास्थ्य अनुरक्षण के उपायों पर आधारित प्ररिपेक्ष्य विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1 शिक्षा मनोविज्ञान– अवधारणा (प्राचीन एवं आधुनिक सन्दर्भ में) उद्देश्य, क्षेत्र एवं शिक्षक के लिए महत्व। मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अधिगमकर्त्ता, परिवेश एवं सुविधा वंचित विद्यार्थी–उनकी मनोसामाजिक विशेषताओं का विश्लेषण।

इकाई–2 वृद्धि एवं विकास– अवधारणा तथा विकास के सिद्धान्त, अवस्थाएं, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, भाषिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास तथा उनका शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में निहितार्थ। किशोराव्यवस्था की समस्याएं एवं समाधान।

इकाई–3 अधिगम एवं अभिप्ररेणा– अधिगम की अवधारणा, विशेषताएं, प्रभावित करने वाले कारक, प्रकार (गैने के अनुसार) अधिगम के सिद्धान्त–थार्नडाइक का सम्बन्धवाद, पावलाव का शास्त्रीय अनुबन्धन, स्किनर का क्रिया प्रसूत अनुबन्धन, कोहलर का अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त तथा पियाजे का संज्ञानवादी अधिगम, आधुनिक रचनावादी परिप्रेक्ष्य में अधिगम विद्यार्थी एवं अध्यापक की भूमिका।

अभिप्रेरणा– अवधारण, प्रकार, मॉसलो का पदानुक्रमिता सिद्धान्त तथा छात्रों को अभिप्रेरित करने की प्रविधियां।

इकाई–4 बुद्धि एवं विशिष्ट बालक– बुद्धि– अवधारणा, प्रकार, सिद्धान्त– स्पीयमैन का द्विकारक तथा गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त, बुद्धि सम्बन्धी आधुनिक अवधारणाएं–भावात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि व स्थितप्रज्ञ शिक्षण अधिगम की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में। बुद्धि मापन (व्यक्तिगत एवं सामूहिक विधियां) तथा चिन्तन का मनोविज्ञान।

विशिष्ट बालक– अवधारणा, प्रकार–प्रतिभाशाली, सर्जनात्मक, अधिगम, अक्षम, शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग तथा बाल अपराध (विशेषताएं, शिक्षण तथा निर्देशन)

इकाई– 5– व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान– व्यक्तित्व– व्यक्तित्व की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा, प्रकार, निर्धारक तत्व, व्यक्तित्व का मापन (आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ, तथा प्रक्षेपीय विधियां) व्यक्तिगत भिन्नताएं तथा शिक्षक के लिए महत्व।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान– अभिप्राय, उद्देश्य, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की विशेषताएँ एवं प्रभावित करने वाले कारक। मानसिक स्वास्थ्य अनुरक्षण के उपाय। सुस्थित जीवनशैली।

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से कोई दो। 25 अंक

1. किसी एक विशिष्ट बालक का व्यष्टि वृत्त अध्ययन (Case Study)
2. नैतिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर आ
3. धारित प्रस्तुतीकरण।
4. किशोरावस्था की समस्याओं पर केन्द्रित अनुभव आधारित परियोजना कार्य (वास्तविक अनुभव आधारित)
5. किसी भी इकाई, प्रकरण पर आधारित दत्त कार्य।
6. संस्कृत वांग्मय में शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप।

3. शिक्षण अधिगम की तकनीकी

कोर्स कोड–103 कुल क्रेडिटस–04

क्रिन्यान्वयन घण्टे–04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–शिक्षण की अवधारणा, चर प्रकार एवं सूत्रों का शिक्षण की व्यावहारिक परिस्थितियों में निहितार्थ समझना।
–शिक्षण की अवस्थाओं एवं स्तरों का शैक्षणिक परिस्थितियों में अनुप्रयोग हेतु कौशल विकास सुनिश्चित करना।
–शिक्षण के प्रतिमानों एवं उसके आधारभूत घटकों के उपयोग हेतु दक्षता विकसित करना।
–शिक्षण के विविध रचनाकौशलों के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
–शैक्षिक तकनीकीएवं उससे समन्धित स्वरूपों के अनुप्रयोग में दक्षता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1 शैक्षिक तकनीकी– अभिप्राय, उद्देश्य, उपागम–कठोरतन्त्र, कोमलतन्त्र एवं प्रणाली उपागम, शिक्षण अधिगम में अनुप्रयोग, विभिन्न रूप–शिक्षण तकनीकी, अनुदेशनात्मक तकनीकी एवं व्यवहारजन्य तकनीकी। अनुदेशनात्मक उद्देश्य–अभिप्राय वर्गीकरण एवं उनका लेखन।

इकाई–2 शिक्षण की अवधारणा– अभिप्राय, विशेषताएं एवं अंग विभिन्न रूप–अनुबन्धन, प्रशिक्षण, अनुदेशन एवं मतारोपण तथा इनमें अन्तर, सिद्धान्त, सूत्र, अधिगम की अवधारणा एवं उसका शिक्षण से सम्बन्ध।
इकाई–3शिक्षण की अवस्थाएँ एवं स्तर– शिक्षण से पूर्व, शिक्षण के समय और शिक्षण के बाद (अभिप्राय, विशेषताएं, एवं संक्रियाओं के सन्दर्भ में) तथा इनमें अन्तर। स्तर–स्मृति, अवबोध एवं विमर्शी स्तर (अभिप्राय अन्तर्निहित अधिगम सिद्धान्त, शिक्षण तथा परीक्षण सम्बन्धी रचनाकौशल के सन्दर्भ में) तीनों मे अन्तर।
इकाई–4शिक्षण के प्रतिमान– अभिप्राय, आधारभूत, तत्व, आवश्यकता, प्रकार–सामाजिक अन्तर्क्रिया स्रोत सूचना प्रक्रिया स्रोत, व्यक्तिगत स्रोत, एवं व्यवहार परिवर्तन स्रोत के आधार पर। कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षण प्रतिमान–आधारभूत शिक्षण प्रतिमान, सम्प्रत्यय सम्प्राप्ति प्रतिमान (आग्रहण एवं चयन प्रतिमान) तथा पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान।
इकाई– 5–शिक्षण रचना कौशल एवं युक्तियाँ–अभिप्राय, अन्तर एवं प्रकार–प्रभुत्ववादी (व्याख्यान, प्रदर्शन, अनुवर्गशिक्षण, टीम शिक्षण एवं अभिक्रमित अधिगम) और जनतान्त्रिक (परिचर्चा, परियोजना, विचारावेश, दत्त कार्य एवं भूमिका निर्वाह) सूक्ष्म शिक्षण–अभिप्राय, उद्देश्य, प्रक्रिया, अवस्थाएँ, लाभ एवं सीमाएँ। अनुरूपित शिक्षण–अभिप्राय, उद्देश्य, प्रक्रिया, लाभ एवं सीमाएँ।

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से कोई दो। 25 अंक

1. इकाई आंधारित व्यष्टिपरक दत्त कार्य।
2. शिक्षण प्रतिमान आधारित पाठ्योजना निर्माण।
3. व्यूहरचना आधारित प्रतिवेदन निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।
4. संगणक आधारित शिक्षण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. सुखिया, एस.पी. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा उ0प्र0।
2. तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा उ0प्र0।
3. पाठक एवं उपाध्याय, शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान अभिषेक प्रकाशन पीतमपुरा, दिल्ली।
4. पाठक, आर.पी, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, राधा प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज दिल्ली।
5. शर्मा. वि. मुरलीधर, संस्कृतशिक्षकप्रशिक्षणे संस्कृत शिक्षणम् प्रसन्नापब्लिकेशन्स तिरूपति।

4.विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–विद्यालय प्रबन्धन की अवधारणा वं गुणवता प्रबन्धन की युक्तियों के अनुप्रयोग हेतु कौशलों का विकास कराना।

–विद्यालय के भौतिक संसाधनों एवं व्यवस्था से अवगत कराना।

–विद्यालय के मानवीय संसाधनों प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों की विशेषताओं एवं दायित्वों का अधुनिक सन्दर्भ में निहितार्थ विकसित करना।

–समय–सारणी एवं पाठयक्रम सहगामी क्रियाओं के नियोजन से सम्बन्धित कौशलों का विकास कराना।

–विद्यालय के विभिन्न अभिलेख एवं पंजिकाओं के रखरखाव की व्यवहारिक परिस्थितियों में आवश्यकता एवं महत्त्व का अवबोध कराना।

–पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण की अवधारणा एवं उनके आधार पर व्यावहारिक परिस्थितियों को बेहतर बनाना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1– विद्यालय प्रबन्धन की अवधारणा, नियम तथा सम्पूर्ण गुणवता प्रबन्धन की अवधारणा (TQM) N.C.E.R.T, S.C.E.R.TएवंNUPA केन्द्र एवं राज्य स्तरीय शिक्षा निदेशालय सी0बी0एस0सी0 बोर्ड। राज्य संस्कृत शिक्षा बोर्ड।

इकाई–2 विद्यालय प्रबन्ध– प्रबन्धन एवं प्रशासन में अन्तर, प्रबन्धन की युक्तियां– विद्यालय का संगठनात्मक परिवेश, अष्टांगिक घटक (आक्टापेस) एवं उनके आधार पर शिक्षण–अधिगम की परिस्थितियों का गुणवतत्ता आश्वासन विद्यालय के भौतिक संसाधन–विद्यालय भवन एवं प्रकार, कक्षा कक्ष तथा फर्नीचर और उसकी व्यवस्था वर्तमान सन्दर्भ मे आधारभूत भोतिक संरचना का महत्व एवं उपयोग।

इकाई–3–विद्यालय के मानवीय संसाधनः प्रभावी प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों की विशेषताएं एवं दायित्व, उत्तम शिक्षक के गुण, शैक्षिक नेतृत्व की अवधारणा एवं प्रकार– रूपान्तरणकारी एवं क्रियान्वितिकारी नेतृत्व–विशेषताएं एवं प्रारूप।

इकाई–4 विद्यालय व्यवस्था में रणनीतिक नियोजन, क्रियान्वयन, अनुश्रवण एवं नियन्त्रण की युक्तियाँ।

इकाई– 5– विद्यालय में विभिन्न अभिलेख एवं रजिस्टरों की आवश्यकता, महत्त्व वं रखरखाव, अनुशासन, पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण की अवधारणा, प्रकार एवं उपादेयता।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. विद्यालय का पार्श्वचित्र तैयार करना।
2. विश्लेषणात्मक अध्ययन आधारित प्रतिवेदन प्रस्तुति।
3. विद्यालय के विभिन्न अभिलेखों में से किसी एक के विश्लेषण के आधार पर उपयोग।
4. विद्यालय गतिविधियों का लेखा जोखा।

अध्येय ग्रन्थ–

1. मिश्र, डॉ0 भास्कर, विद्यालय व्यवस्था भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. जोशी, श्रीमती रजनी, विद्यालय में प्रशासन एवं प्रबन्ध, शारदा पुस्तक मदिर, इलाहाबाद।
3. सुख्या, एस.पी. विद्यालय व्यवस्था।
4. सेतिया, विद्यालय प्रबन्ध।
5. शर्मा, आर.ए. विद्यालीय प्रबन्ध।
6. भटनागर, ए.वी, विद्यालय प्रबन्ध।

5. संस्कृत शिक्षण

कोर्स कोड–105 कुल क्रेडिटस–04

क्रिन्यान्वयन घण्टे–04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–संस्कृतभाषा के वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक महत्त्व से परिचित कराना।

–शिक्षण के विभिन्न स्तर पर संस्कृतभाषाशिक्षण के महत्त्व, उसकी आवश्यकता को प्रतिपादित कराना।

–संस्कृतभाषाशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए विविध शिक्षणकौशलों के प्रयोग में दक्षता उत्पन्न कराना।

–संस्कृत भाषा की विविध विधाओं के अवबोध हेतु प्रभावी शिक्षण विधियों का ज्ञान एवं पाठयोजनाओं के निर्माण की योग्यता उत्पन्न कराना।

–संस्कृतभाषा शिक्षण में रूचि हेतु दृश्य–श्रव्य, साधनों, पाठ्यसहगामी क्रियाओं के प्रयोग की दक्षता उत्पन्न कराना।

–मूल्यांकन की अवधारणाओं से अवगत कराना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1– संस्कृत भाषा का महत्व – संस्कृत भाषा का उद्भव एवं विकास। संस्कृत भाषा का सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व। संस्कृत भाषा का अन्य भाषाओं के साथ संबध। मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में संस्कृत। आधुनिक भारत में संस्कृत अध्यापन का महत्त्व। पाठ्यक्रम में संस्कृतभाषा का स्थान एवं त्रिभाषा सूत्र। प्राथमिक, माध्यमिक,एवं उच्च स्तर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य।

इकाई–2 (क) संस्कृत भाषा विज्ञान–, ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, संक्षिप्त परिचय एवं भाषा प्रयोगशाला की सहायता से अभ्यास एवं भाषायी कौशल।

(ख)–संस्कृत शिक्षण की विधियां – परम्पराविधि, भण्डारकरविधि, मोखिकविधि, प्रत्यक्षविधि, पाठ्यपुस्तकविधि, आगमन–निगमनविधि, समाहारविधि (प्रत्येक विधि की सोदाहरण प्रस्तुति)

इकाई–3 संस्कृत शिक्षण की विभिन्न विधाओं का शिक्षण– उच्चारण शिक्षण एवं गद्य, पद्य, व्याकरण, नाटक, रचना, अनुवाद, इनका स्वरूप, शिक्षण उद्देश्य, शिक्षणविधियाँ तथा पाठ्योजना (विद्यालय पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में)

इकाई–4– संस्कृत शिक्षण मे नवाचार– संस्कृतशिक्षण में दृश्य–श्रव्योपकरणों का प्रयोग और नये प्रयोग (ई–अधिगम) संस्कृतशिक्षण में पाठ्यसहमागी क्रियाएं। भाषा क्रीडाएं, वाद–विवाद, संगोष्टी, गोष्ठी, अन्त्याक्षरी, गीत श्लोकोच्चारण, एवं अन्य क्रियाएं। संस्कृत–पाठ्यपुस्तक–उद्देश्य, रचनासिद्धान्त, गुण, संस्कृतपाठ्यपुस्तकों में सम्प्रेषणोपागम, उपागम।

इकाई– 5– संस्कृत शिक्षण में परीक्षा एवं मूल्यांकन– शलाका परीक्षा, विवेचनात्मक शक्ति परीक्षा, सामान्य विवेक परीक्षा योग्यता परीक्षा एवं नवीन परीक्षा प्रविधियाँ।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. संस्कृत के विविध स्तरीय पाठ्यक्रम का विशलेषण।
2. संस्कृत वार्त्ता पत्रिकाओं का संकलन एवं महत्त्वपूर्ण तथ्यों का चयन।
3. संस्कृत वार्ता में उच्चारण, शब्द चयन संवाद एवं समाचार लेखन।
4. भाषा प्रयोगशाला आधारित उच्चारणाभ्यास तथा संस्कृतवार्ता–विविध संदर्भों में।
5. संस्कृत की विभिन्न विधाओं पर पाठयोजना का निर्माण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. सफाया, आर.एन, संस्कृतशिक्षण , हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, हरियाणा।
2. पाण्डेय, आर.एस. संस्कृतशिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा उ0प्र0।
3. द्विवेदी, वाचस्पति, संस्कृतशिक्षणविधि, सुशील प्रकाशन, पटना बिहार।
4. साम्बशिवमूर्ति, संस्कृतशिक्षणम्।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम

द्वितीय सेमेस्टर

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – द्वितीय सैमेस्टर कुल अंक– 600 कुल क्रेडिटस–**24+4***

क्र0सं0	कोर्स सं	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिटस	घण्टे सप्ताह	घण्टे / सेमेस्टर
		सैद्धान्तिक		500	20	20	400
121	6	अधिगम आकलन	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
122	7	समसामयिक भारत एवं शिक्षा	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
123	8	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसन्धान	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
124	9	शास्त्र शिक्षण (कोई एक)	संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Core Elective Pedagogy)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
	9-i 9-ii 9-iii 9-iv 9-v 9-vi	ज्योतिष शिक्षण साहित्य शिक्षण दर्शन शिक्षण व्याकरण शिक्षण वेद शिक्षण कर्मकाण्ड शिक्षण		100			
125	10	अन्य विद्यालयीय विषय शिक्षण (कोई एक)	संकेन्द्रिक वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Core Elective Pedagogy)	75(E)+25(1)	4	4	80
	10-i 10-ii 10-iii 10-iv 10-v	अंग्रेजी शिक्षण हिन्दी शिक्षण सामाजिक शिक्षण गणित शिक्षण अर्थशास्त्र / इतिहास / भूगोल / राजनीतिविज्ञान शिक्षण					
I31		प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08	160
	(i) (ii) (iii) (iv)	सूक्ष्म शिक्षण द्वारा कौशलों का विकास शास्त्र एवं अन्य विषय शिक्षण पर आधारित पाठयोजना निर्माण एवं अनुरूपित रूप में प्रस्तुतिकरण शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण विद्यालय सम्बद्धता शिक्षण आधारित विमर्शी प्रतिवेदन निर्माण–दो सप्ताह		40 20 20 20			
132		शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	=80% Attendance	
	i) (ii) (iii) (iv) (v)	स्लोंगन लेखन प्रतियोगिता स्वच्छता अभियान परिसर आधारित नुक्कड़ नाटक सांस्कृतिक कार्यक्रम क्रीड़ा एवं खेल–कूद					

6–अधिगम आकलन

कोर्स कोड–121 कुल क्रेडिटस–04

क्रिन्यान्वयन घण्टे–04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–अधिगम आकलन के स्तरों यथा–परीक्षा आकलन, उपकरण निर्माणउनका अनुप्रयोग एवं परिणामों का विश्लेषण करने का प्रवीणता विकसित करना।

–अधिगम आकलन के नवीन प्रतिमानों के अनुप्रयोग हेतु दक्षता लाना।

–आकलन में प्रयुक्त सांख्यकीय एवं संगणक आधारित प्रकरणों के प्रभावी उपयोग की क्षमता विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1– मापन एवं मूल्यांकन–मापन मूल्यांकन एवं आकलन–सम्प्रत्ययात्मक दृष्टि से अन्तर,एवं उपयोग, प्रकार–योगात्मक, संरचनात्मक एवं निदानात्मक। मापन के स्तर–नामित क्रमित, अन्तरित एवं अनुपातिक।

इकाई–2 आकलन–अधिगम के स्तर, तथ्यों एवं सम्प्रत्ययों से सम्बन्धित धारणा एवं प्रत्यास्मरण, विशेष कौशलों को अनुप्रयोग, समस्या, समाधान तथा विविध परिस्थितियों में अधिगम का अनुप्रयोग, व्यक्तिगत अनुभवों के आधार का विश्लेषण, एवं उन पर चिन्तन, आकलन के विविध संदर्भ–विषयवस्तु आधारित एवं व्यक्ति आधारित संदर्भ।

(ख) इकाई–3 विषय आधारित अधिगम का आकलन–विषय आधारित अधिगम का रचनावादी परिपेक्ष्य में स्पष्टीकरण, आकलन के उपकरण, कार्यों के प्रकार–परियोजना, दत्तकार्य तथा निष्पादन। उपलब्धि परीक्षण निर्माण विधि। एवं स्वयं सहपाठी एवं शिक्षकों द्वारा अधिगम प्रक्रिया का प्रेक्षण। स्व आकलन तथा सहपाठी आधारित आकलन। पोर्ट फोलियो का निर्माण– आकलन के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक पक्ष–उपयुक्त उपकरण।

इकाई– 4–उपयुक्त आकलन–उपकरण निर्माण हेतु शिक्षण की दक्षताएं– सन्दर्भ एवं अधिगमकर्ता आधारित आकलन उपकरणों को सुनिश्चित करने की दक्षता। अधिगमकर्त्ता को चिन्तन हेतु सक्रिय बनाने वाले कार्यों तथा प्रश्नो का निर्धारण। आकलन हेतु उपयुक्त निकषों का निर्धारण। छात्र पोर्ट फोलियों का निर्माण एवं उनके विविध अंशों का नामकरण। अधिगम के लिए आकलन आधारित प्रतिपुष्टि।

इकाई– 5–प्रदत्त विश्लेषण, प्रतिपुष्टि एवं प्रतिवेदन–सांख्यकिय प्रविधियां– आवृति वितरण तालिका, केन्द्रवर्ती प्रवृत्ति , विचलन के मान, प्रतिशतमक, सामान्य संभाव्यता आधारित वितरण, सहसम्बन्ध गुणांक एवं व्याख्या। प्रदत्तों का बिन्दुरेखीय प्रदर्शन। संरचनात्मक आकलन के घटक के रूप में प्रतिपुष्टि, प्रतिपुष्टि हेतु आकलन का अनुप्रयोग, शिक्षकों द्वारा प्रदत्त प्रतिपुष्टियां–लिखित टिप्पणियाँ । सहपाठी आधारित प्रतिपुष्टि–मार्किगं एवं ग्रेडिंग। अधिगमकर्त्ता का एक व्यापक पार्श्वचित्र विकसित करना। प्रतिवेदन प्रस्तुति एवं उनका प्रयोजन छात्र प्रोन्नति परिसूचक के रूप में भावी शैक्षणिक निर्णयों का आधार बन सकने की दृष्टि से तथा अधिगमकर्त्ता का सम्पूर्ण पार्श्वचित्र विकसित करने की दृष्टि में।

सत्रीय कार्य– कोई दो 25 अंक

1. (Blue Print Test) ब्लू प्रिन्ट निर्माण
2. (Test Construction) परीक्षण निर्माण
3. केन्द्रीय एवं राज्य बोर्ड परीक्षा प्रणाली का अध्ययन एवं प्रस्तुति।

अध्येय ग्रन्थ–

1. गुप्ता, एस.पी. (2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. अस्थाना, विपिन, (1999) मनोविज्ञान और शिक्षा मे मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. भार्गव, महेश, (1990) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, भार्गव बुक डिपों, आगरा।
4. पाण्डेय, के.पी. (2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी।

7.समसामयिक भारत एवं शिक्षा

कोर्स कोड–122 कुल क्रेडिटस–04

क्रिन्यान्वयन घण्टे–04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, परिपेक्ष्य में शिक्षा के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

–शिक्षा के विकास मे विभिन्न समितियों तथा आयोगों के योगदान का परिज्ञान कराना।

–स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के विकास हेतु कृतकायों से अवगत कराना तथा उनका शैक्षिक नीतियों के लिए निहितार्थ समझाना।

–शिक्षा के विभिन्न स्तरों मेंव्यापक समसामायिक समस्याओं एवं उनके समाधान हेतु किये जा रहे प्रयासों से परिचित कराना।

–शिक्षा की नई चुनौतियों का समीक्षात्मक विश्लेषण एवं उनके समाधान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1– प्रारम्भिक शिक्षा–आवश्यकता, उद्देश्य, सार्वभौमीकरण, आपरेशन ब्लैकबोर्ड अपव्यय–अवरोधन तथा अन्य समस्याएं एवं समाधान, सर्वशिक्षा अभियान एवं शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) , रमसा योजना।

इकाई–2माध्यमिक एवं व्यवसायिक शिक्षा–अवधारणा, महत्त्व, उद्देश्य, समस्याएं एवं समाधान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण। व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा, महत्त्व, उद्देश्य, समस्याएं एवं समाधान।

इकाई–3उच्च शिक्षा–अवधारणा, महत्त्व, उद्देश्य, समस्याएं एवं समाधान। उच्च शिक्षा में स्वायत्तता एवं गुणवत्ता राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अभियान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की भूमिका।

इकाई– 4–अध्यापक शिक्षा–शिक्षक–प्रशिक्षण के विभिन्न स्तर–पूर्वसेवा एवं सेवारत शिक्षक–प्रशिक्षण में केन्द्र प्रायोजित कार्यक्रम, अध्यापक शिक्षा विश्वविद्यालय कार्यक्रम, अध्यापक शिक्षा हेतु प्रयुक्त अद्यतन उपागम, क्षमता संवर्धन के उपाय, सूचना सम्प्रेषण का अनुप्रयोग, अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता के नये आयाम, अध्यापक शिक्षा के उन्नयन में एन.सी.टी.ई. एवं एस.सी.ई.आर. टी. की भूमिका।

इकाई– 5–स्त्री शिक्षा, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की शिक्षा– अवधारणा, उद्देश्य महत्त्व। दुर्गाभाई देशमुख, हंसामेहता महिला आयोग एवं उनकी संस्तुतियां। स्त्री शिक्षा के विकास–में सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं एवं राष्ट्र स्तरीय/राज्य स्तरीय शीर्ष एवं नियामक शिक्षण संस्थाओं की भूमिका। स्त्री शिक्षा की विभिन्न समस्याएं एवं उनके समाधान। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की शिक्षा–अवधारणा, उद्देश्य, महत्त्व, समस्याएं एवं समाधान। उत्तराखण्ड में स्त्री शिक्षा के उन्नयन के लिए संचालित योजनाएं (गौरा देवी कन्या धन योजना कार्यक्रम)

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से कोई दो। 25 अंक

1. सेमिनार प्रस्तुतीकरण।
2. एन.सी.एफ. 2005, एन.सी.टी.ई., यू.जी.सी., नी.यू.ई.पा., एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यों की समीक्षा।
3. भारतीय शिक्षा की समस्याओं पर वाद–विवाद, समूह परिचर्चा, पैनल परिचर्चा।
4. अधिगम संसाधन के रूप मे ं पुस्तकालय/प्रयोगशाला/अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का अध्ययन।

अध्येय ग्रन्थ–

1. वासु (1985) एजुकेशन इन मॉर्डन इण्डिया (ओरिएण्ड बुक कम्पनी) नई दिल्ली।
2. भगवान दयाल (1991) दी डेवलपमेंट ऑफ माडर्न इण्डियन एजूकेशन (ओरिएण्ड–लोंगमास) लंदन।
3. गुप्ता, एस.पी. (2000) भारतीय शिक्षा का इतिहास व समस्याएं, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद
4. कबीर, हुमायूं (1980) एजूकेशन इन न्यू इण्डिया एशिया बुक हाउस, मुम्बई।
5- Pathak, R.P (2006) Global Trrnds and Development of Education in Mordern India, Atlantic Publishers Ansari Road, Daryagang New Delhi.

8.शिक्षा के क्रियात्मक अनुसंधान

कोर्स कोड–123 कुल क्रेडिटस–04

क्रिन्यान्वयन घण्टे–04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

–शैक्षिक अनुसंधान के विभिन्न स्वरूपों की अवधारणा से परिचित कराना।

–क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकारों एवं आवश्यकता से अवगत कराना।

–क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया में अन्तर्निहित सोपानों के प्रयोग का अवबोध विकसित कराना।

–क्रियात्मक अनुसंधान के परिणामों को सांख्यिकी एवं अन्य उपयुक्त विधियों द्वारा विश्लेषित करने की क्षमता का विकास कराना।

–क्रियात्मक अनुसंधान में परियोजना निर्माण, क्रियान्वयन एवं प्रतिवेदन लेखन का क्षमता का विकास करना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1–शैक्षिक अनुसंधान–अवधारणा एवं विभिन्न स्वरूप–मौलिक, व्यवÞr एवं क्रियात्मक अनुसंधान (अभिप्राय, उद्देश्य एवं सीमाएं) तथा तीनों में अन्तर। क्रियात्मक अनुसंधान–विशेषता ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य महत्त्व एवं क्षेत्र।

इकाई–2–क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग–विद्यालय, कक्षा एवं शिक्षकों के सन्दर्भ में। क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकार– व्यक्तिगत, प्रतिभाग आधारित, विद्यालय एवं जनपद स्तरीय।

इकाई–3–क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया–समस्या को पहचानना, समस्या का परिभाषीत्तरण एवं सीमांकन, सम्भावित कारणों का पता लगाना, क्रियात्मक परिकल्पना निर्माण, क्रियात्मक परिकल्पना के क्रियान्वयन हेतु कार्ययोजना विकास एवं परिणाम मूल्यांकन। क्रियात्मक अनुसन्धान अभिकल्प– विशेषताएं संरचनात्मक घटक , प्रकार व्यावहारिक एवं प्रतिभाग आधारित तथा उनमें अन्तर एवं समानताएं।

इकाई– 4–क्रियात्मक अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी–प्रदत्तों का रेखाचित्रीय प्रस्तुतिकरण (वृत्तारेख, स्तम्भाकृति, संचयी आवृत्तिवक्र एवं संचयी प्रतिशतवक्र) केन्द्रवर्ती मानों के वर्गीकृत एवं अवर्गीकृत प्रदतों की गणना विधि (मध्यमान, मध्याकमान एवं बहुलांकमान)

प्रमाणिक विचलन (अवर्गीकृत एवं वर्गीकृत) की गणना, सहसम्बन्ध–अभिप्राय, प्रकार सहसम्बन्ध गुणांक एवं स्पीयमैन अनुस्थिति अन्तर विधि द्वारा गणना।

इकाई– 5–क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना निर्माण– प्रारूप, अपेक्षित, सावधानियां, महत्वपूर्ण, बिन्दु विद्यालयीय परिस्थितियों प्रयोग।

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन–आवश्यकता घटक, प्रारूप, अपेक्षित सावधानियाँ, विद्यालय परिस्थिति से सम्बन्धित किसी क्रियात्मक अनुसंधान की परिस्थिति की समस्या पर प्रतिवेदन लेखन।

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से कोई दो। 25 अंक

1. दत्त कार्य
2. किसी विद्यालयीय समस्या पर आधारित प्रतिवेदन लेखन।
3. किसी प्रदत्त आधार सामग्री पर सांख्यिकी विधियों द्वारा परिणाम मूल्यांकन।
4. उत्तराखण्ड में संस्कृत विद्यालयों में समस्यायें।

अध्येय ग्रन्थ–

1. सक्सेना. एन. आर. (1996) स्वरूप एवं ओबराय, एस.सी शिक्षण की तकनीकी, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
2. रूहेला, एस.पी. (1973) शिक्षण तकनीकी, राज प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सुखिया, एस.पी. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, उ0प्र0
4. तिवारी, गोविन्द, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, उ0प्र0
5. पाठक, एवं उपाध्याय, शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान अभिषेक प्रकाशन पीतमपुरा, दिल्ली।
6. पाठक, आर0पी0, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, राधा प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज दिल्ली।
7. भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2014) विद्यालयीय शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

9.शास्त्र शिक्षण

कोर्स कोड–124

निर्देश–इस कोर्स का उत्तर संस्कृत माध्यम से लिखना अनिवार्य है।

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

1. विविध शास्त्रों के स्वरूप, महत्त्व एवं उपयोगिता को बताते हुए संस्कृत शास्त्रों के अध्ययन में रूचि जागृत करना।
2. शास्त्रों की विविध विधाओं के अध्यापन हेतु परम्परागत एवं आधुनिक शिक्षणविधियों का ज्ञान कराना।
3. शास्त्रशिक्षण की पाठयोजना निर्माण में प्रवीणता उत्पन्न करनां।
4. शास्त्रों के शिक्षण को रोचक एवं नवीनतम स्वरूप प्रदान करने हेतु दृश्य–श्रव्य साधनों एवं कौशलों के प्रयोग की प्रवीणता की जानकारी देना।
5. विविध शास्त्रों में वर्णित विषयवस्तु के शिक्षण द्वारा नैतिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों का परिचय प्रदान करना।

निर्देश–निम्नलिखित में से किसी एक विषय का चयन करें।

9–1 ज्योतिष शिक्षण

कोर्स कोड– 124 (1) — कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

पाठ्य–वस्तु — 75 अंक

इकाई– 1– ज्योतिष–शिक्षण का स्वरूप, महत्त्व एवं उद्देश्य।

इकाई– 2– नैदानिक परामर्श में ज्योतिष शास्त्र की भूमिका।

इकाई– 3– अध्यापन को प्रभावी बनाने हेतु सहायकोपकरण का प्रयोग।

इकाई– 4– ज्योतिष–शिक्षण के प्रतिमानः यात्रा मुहूर्त्त, विवाह मुहूर्त्त, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, जन्म कुण्डली निर्माण मेलायकनिर्माण।,

इकाई– 5– ज्योतिष–शिक्षण की विधियांः आगमन–निगमन, विश्लेषण–संश्लेषण ह्यूरिस्टिक, एवं परियोजनां–विधि, प्रश्नोत्तर विधि, पाठयोजना निर्माण, नवप्रयोग एवं मूल्यांकन।

सत्रीय कार्य– — 25 अंक

1. विषयवस्तु के निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग।
2. साहित्य ग्रन्थावलोकन।
3. वाचन, पठन।
4. गद्य, पद्य, संरचना।

9–2 साहित्य– शिक्षण

कोर्स कोड– 124 (2) — कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/सप्ताह — कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

पाठ्य–वस्तु– — 75 अंक

इकाई– 1– साहित्य–शिक्षण का स्वरूप, महत्त्व एवं उद्देश्य।

इकाई– 2– भाषा, विषयवस्तु, अलंकार, कल्पना, सौन्दर्यनुभूति।

इकाई– 3–रसानुभूति में रस, छन्द एवं अलंकार की उपयोगिता।

इकाई– 4– साहित्य–शिक्षण की विधियां, पारम्परिकविधि, व्याख्याविधि, टीकाविधि, स्वाध्याय विधि, क्रीडा विधि, खण्डान्वय–दण्डान्वयविधि।
इकाई– 5–पाठयोजना निर्माण– नवाचार।

सत्रीय कार्य 25 अंक

9–3 दर्शन शिक्षण

कोर्स कोड– 124 (3) कुल क्रेडिटस–04
क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों– 75 अंक

इकाई– 1– भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का सम्प्रत्यय।
इकाई– 2– दर्शन–शिक्षण का महत्त्व एवं उद्देश्य, विधियां: विकासविधि, इतिहासविधि, समस्याविधि, निदर्शनविधि, निरीक्षणाधीन स्वाध्याय, व्याख्याविधि।
इकाई– 3– दर्शन एवं सामाजिक विकास, दार्शनिक परामर्श।
इकाई– 4–दर्शन–शिक्षण में शिक्षण–अधिगम सामग्री, दूररथ शिक्षा में दर्शन।
इकाई– 5– दर्शन शिक्षण की पाठयोजना।

सत्रीय कार्य–25 अंक

9–4 व्याकरण– शिक्षण

कोर्स कोड– 124 (4) कुल क्रेडिटस–04
क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों– 75 अंक

इकाई– 1–व्याकरण शास्त्र शिक्षण का इतिहास, स्वरूप एवं उद्देश्य।
इकाई– 2– व्याकरण–शिक्षण में कण्ठस्थीकरण का महत्त्व एवं उच्चारण प्रशिक्षण।
इकाई– 3– व्याकरण–शिक्षण की विधियां–पारम्परिक, आगमन–निमगन, ह्यूरिस्टिक एवं प्रयोजन विधि।
इकाई– 4–व्याकरण–शिक्षण में दृश्य–श्रव्योपकरण का प्रयोग (चित्र एवं रेखाचित्र) प्रयोगिक व्याकरण (Functional Grammar)
इकाई– 5–भाषाप्रयोगशाला तथा व्याकरण – शिक्षण में सगंणक का प्रयोग, पाठयोजना निर्माण।
सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. प्रयोजना तथा ह्यूरिस्टिक विधि का प्रयोग।
2. संगणक द्वारा दृश्य–श्रव्य सामाग्रियों का निर्माण।

9–5 वेद–शिक्षण

कोर्स कोड– 124 (5) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

पाठ्य–वस्तु 75 अंक

इकाई– 1– वेदों का महत्त्व, शिक्षणोद्देश्य, वेदों के मूलपाठों को कण्ठस्थ करने की पारम्परिक पारायणविधि एवं आधुनिकविधि।

इकाई– 2– स्वाध्याय की आवश्यकता।

इकाई– 3–वेदों के मूल पाठों के व्याख्यान मे मीमांसा–कल्पसूत्र–निरूक्त आदि का महत्त्व।

इकाई– 4– वेदों के प्राचीन एवं नवीन व्याख्याकारों की समीक्षा।

इकाई– 5 पाठयोजना निर्माण।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

9–5 कर्मकाण्ड–शिक्षण

कोर्स कोड– 124 (6) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

पाठ्य–वस्तु–75 अंक

इकाई– 1–महत्त्व एवं उद्देश्य एवं कर्मकाण्ड के प्रकार।

इकाई– 2–क्रिया द्वारा अधिगम।

इकाई– 3–ह्यूरिस्टिकविधि, एवं प्रयोजनविधि प्रत्यक्ष विधि, व्याख्यानविधि।

इकाई– 4–अध्यापन की सुगमता के लिए चित्र, रेखाचित्र एवं अन्य दृश्य–श्रव्योपकरणों का प्रयोग।

इकाई– 5 वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग एवं वेदी निर्माण।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

अध्येय ग्रन्थ–

1. प्रमेय पारिजान श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ।
2. सर्वदर्शन समन्वय, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ।
3. शास्त्री, पी.एन, दर्शन शिक्षण, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ भोपाल परिसर।
4. सफाया, आर.एन., संस्कृतशिक्षण, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, हरियाणा।
5. पाण्डेय, आर.एस. संस्कृतशिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा उ0प्र0।
6. उपाध्याय, बी.के., एवं देवनाथन आर., व्याकरण शिक्षण विधि, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी।
7. झा., नागेन्द्र वैदिक शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति, वेंकटेश प्रकाशन, दिल्ली।
8. मिश्र, लोकमान्य, साहित्यशिक्षणम्।
9. झा., नागेन्द्र ज्योतिषशिक्षाम्।
10. उपाध्याय, बी.के., एवं मिश्र घनश्याम, साहित्यशिक्षण पद्धति, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी।
11. मिश्र, भास्कर, वैदिक शिक्षा पद्धति।
12. पाठक, आर.पी. प्राचीन भारतीय शिक्षा कनिष्का प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली।

7.अन्य विद्यालयीय विषय शिक्षण

निम्नलिखित में से किसी एक विषय का चयन करें।

10–1 Teaching of English

कोर्स कोड– 125 (1) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

Objectives-75 Marks

- The student teacher will be able to-
- Acquaint with the nature & aims of teaching English.
- Familiarize with approaches & method of teaching English.
- Acquaint with the teaching of various lesson of English.
- Prepare the lesson plan of various lesson of English
- Tell the use of various instructional aids in English Teaching.
- Develop skills of evaluation of various lessons in English.

Unit-1- Nature of English Languge- (a) Meaning & function of Language, Linguistic Principles, Importance of english Language, Present position of English in school Curriculum. Aims & Objectives of teaching English at primary, Secondary & Higher Secondary Lavels. Behavioural Objectives Meaning & Writing behavioural Objectives for prose, Poetry & Grammar lessons.

Unit-2- Approaches & Methods of teaching English –Meaning & their differences Approaches Situationl, Structural & Communicative Methods- Translation, Direct & Billingual.

Unit-3- Teaching of Various lesson in English – Teaching of prose, Poetry, Grammar, Composition, Reading& Writing (Based on school curriculum)

Unit-4- lesson Planning &Teaching Learing Material- Meaning, Importance, Formats for various types of lesson in English viz. prose, poetey, Grammar, Composition. Teaching learning Material- Meaning Improtance, Precaution, Use of aids in English-Black Board, Flannel Board, pictures, Charts, Modle, Tape recorder, Record player. TV.OHP & Language Laboratory.

Unit-5- Evaluation in English Teaching – Concept of Evaluation, Measurement & Testing. Different Types of Question-Objective, Short Answer and Essay Type (Meaning, Characteristics, type &Their constucation) Characteristics of a good test for measuring learning outcomes in English.

Sessional Work- Any two of the following-25 Marks

1- Preparing lesson plan on any one topic related ro prose, poetry & Grammar.
2- Preparing Teaching Learing Material for teaching any topic in various lesson of English.

3- Developing communication skills in English.
4- Preperation of an Achievement test of english Language.

Suggested Readings-

1- Sachdeva, M.S (2003) Teaching of English In India, Tandon Publication, Ludhiana.
2- Pandey, K.p., Panday Bhardwaj Amita (1996) Teaching of English in India, Vishwavidyalaya prakashn Chowk Varanasi.
3- Jain R.K. Sharma (2005) Essentials of English, Vinod Pustak Mandir, Agra.
4- Kohli A.L., (1996) Techniques of teaching English[Dhanpat Rai & Sons Nai Sarak New Delhi.
5- Sharma Kusum (2007) A Hand Book of English Teaching, Radha Prakashn Mandir, Agra.

10–2 हिन्दी–शिक्षण

कोर्स कोड– 125 (2) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

– हिन्दी भाषा का महत्त्व तथा उसके उद्देश्यों से अवगत कराना।
– साहित्यिक विधाओं के शिक्षण के लिए विधियों, प्रविधियों एवम दृश्य श्रव्य सामग्री का चयन।
– निर्माण प्रयोग करने योग्य बनाना।
– उच्चारण एवं वर्तनी से सम्बन्धित दोषेा की पहचान करना तथा सुधारात्मक युक्तियों के अनुप्रयोग की योग्यता विकसित करना।
– हिन्दी भाषा शिक्षण की विधओं की पाठ योजना निर्माण से सम्बन्धित दक्षता का विकास करना।

पाठ्य–वस्तु 75 अंक

इकाई– 1– हिन्दी भाषा की अवधारणा, उद्देश्य, महत्त्व एवं पाठ्यक्रम में सीान।

इकाई– 2– भाषा कौशल (क) वाचन एवं लेखन शिक्षण–वाचन–अभिप्राय, भेद–सस्वर वाचन एवं मौन वाचन द्रुत वाचन के उददेश्य एवं शिक्षण। लेखन शिक्षण–अभिप्राय, सुलेख अनुच्छेद, श्रुतलेख।

(ख) हिन्दी भाषा विज्ञान–ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान। ध्वनि–हिन्दी की ध्वनियां, स्वर एवं व्यंजन, बल अनुत्तान से सम्बन्धित विशेषताएं शब्द निर्माण एवं वाक्य रचना।।

इकाई– 3–पाठ्यपुस्तक एवं दृश्य श्रव्य उपकरण। पाठ्यपुस्तकः आवश्यकता, उद्देश्य, आन्तरिक एवं बाह्य गुण। दृश्य श्रव्य, उपकरण, आवश्यकता, महत्त्व प्रयोग एवं नवाचार।

इकाई– 4–हिन्दी की विधाओं /पाठों का शिक्षण हिन्दी विधाओं–गद्य, पद्य, व्याकरण, नाटक, निबन्ध का स्वरूप शिक्षण, उद्देश्य, शिक्षण विधियां तथा पाठ योजना।

इकाई– 5 हिन्दी साहित्य में रूचि उत्पन्न करने के साधन–कवि सम्मलेन, कविगोष्ठी, विद्यालय पत्रिका। भित्ति पत्रिका, अभिनय , वाद–विवाद, अन्त्याक्षरी। हिन्दी के विकास में कार्यरत संस्थाओं की भूमिका।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. उच्चारण आधारित अभ्यास भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से।
2. पाठयोजना निर्माण।
3. शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण।
4. शब्द भण्डार विकास।
5. ललित निबन्ध लेखन प्रकरण आधारित।
6. सूक्ति संकलन।

अध्येय ग्रन्थ–

1. पाण्डेय, आर.एस. संस्कृतशिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा उ0प्र0।
2. शर्मा, ब्रजेश्वर, भाषाशिक्षण और भाषा विज्ञान केन्द्रीय हिन्दी भाषा आगरा, उ0प्र0।
3. भाई योगेन्द्रजीन, हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा उ0प्र0।
4. श्रीवास्तव, रवीन्द्र, भाषा शिक्षण मैकमिलेन कम्पनी दरियागंज, नई दिल्ली।

10–3 सामाजिक–शिक्षण

कोर्स कोड– 125 (3) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों– 75 अंक

– सामाजिकविज्ञान की अन्तर्विषयी प्रकृति का अवबोध कराना।

–कक्षा शिक्षण परिस्थिति में सामाजिक विज्ञान की विभिन्न शिक्षणाविधियों को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की जानकारी देना।

– सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इकाई योजना और पाठयोजना का निर्माण करने की जानकारी देना।

– समाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयुक्त सहायक सामग्री का निर्माण और उपयोग करने की तथा मूल्यांकन की जानकारी प्रदान करना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**)

इकाई– 1– सामाजिक अध्ययन का स्वरूप– अवधारणाा अन्तर्विषयी प्रकृति, उद्देश्य, महत्त्व और क्षेत्र।

इकाई– 2– सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम– चयन निमार्ण, तथा सिद्धान्त। पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में अन्तर, राष्ट्रीय केन्द्रिक पाठ्यचर्चा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के सन्दर्भ में)

इकाई– 3– सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियां– व्याख्यानविधि, प्रदर्शनविधि, प्रोजेक्ट विधि, वार्तालापविधि, समास्यसमाधानविधि, प्रविधियां: प्रश्न पूछना, अवलोकन, वादविवाद, सम्भाषण, पैनल चर्चा मस्तिष्क मन्थन।

इकाई– 4– समाजिक अध्ययन की शिक्षण में पाठयोजना– इकाई योजना और पाठयोजना में अन्तर, पाठयोजना की आवश्यकता और महत्त्व, पाठयोजना के सोपान, अनुदेशनात्मक उद्देश्य, (इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र शिक्षण के सन्दर्भ में)

इकाई– 5 सामाजिक अध्ययन मे श्रव्य–दृश्य साधन और सामुदायिक संसाधनों का उपयोग– श्रव्य–दृश्य साधन–महत्त्व और उपयोग, सामाजिक अध्ययन में प्रयोगशाला, सामुदायिक संसाधनों का महत्त्व और शिक्षक की भूमिका, सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मूल्यांकन।

सत्रीय कार्य–किन्दी दो पर लिखें। 25 अंक

1. समाजिक अध्ययन और सामाजिक मुद्दे पर व्यष्टि अध्ययन आधारित प्रतिवेदन तैयार करना।
2. समाजिक मुद्दे से संबधिंत समाचार पत्र की कतरने संकलित करना।
3. प्रदशनी, अजायबघर, प्रयोगशाला, पुरातत्व संग्रहालय, प्रकोष्ट अध्ययन पर प्रतिवेदन तैयार करना।
4. समाजिक विज्ञान शिक्षण से संबधित विषय पर सहायक सामग्री निर्माण करना।
5. वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रश्नपत्रों का निर्माण करना।
6. चयनित ग्रामों मे शिक्षा एवं स्वास्थ्य, स्वच्छता के प्रति जागरूकता।

अध्येय ग्रन्थ–

1. बाइनिंग एण्ड बाइनिंग (1985) टीचिंग आफ सोशल स्टडीज, मैकग्राहिल न्यूर्याक।
2. पाठक, आर.पी. (2010) दि टींचिग ऑफ सोशल स्टडीज अटलाटिक पब्लिर्शस दरियागंज, नई दिल्ली।
3. तनेजा, वी. आर. (1988) सामाजिक अध्ययन शिक्षण मार्डन पब्लिर्शिस, लुधियाना।
4. शर्मा वेणीमाधव, 1980) सामाजिक अध्ययन की शिक्षा, धनपतराय एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
5. शैदा, बी.डी. और गुप्ता अमृतलाल, (1982) बेसिक सामाजिक अध्ययन एशिया प्रकाशन, मुम्बई
6. श्रामपाल सहिं (1985) सामाजिक अध्ययन शिक्षण, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
7. चौधरी और गोयल (1990) स्किल्स इन सोशल स्टडीज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. शर्मा, एम.बी. (1988) सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधि, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. पाठक, आर.पी. (2010)सामाजिक अध्ययन शिक्षण राधा प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली।
10. त्यागी, गुरूसरन दास (1994) सामाजिक अध्ययन शिक्षण , आलोक प्रकाशन, लखनउ।

10–4 गणित–शिक्षण

कोर्स कोड– 125 (4) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

– गणित शिक्षण का अन्य विषयों से सम्बन्ध निरूपण का अवबोध कराना।

–गणित क्लब, गणित खेल एवं गणित प्रयोगशाला जैसी क्रियाओं को आयोजित कराना।

–अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित से संबधिंत प्रकरण की पाठयोजना के निर्माण करने की जानकारी देना।

पाठ्य–वस्तु (**Content**)

75 अंक

इकाई– 1– गणित शिक्षण– अवधारण, प्रकृति, उद्देश्य एवं क्षेत्र। प्रमुख भारतीय गणितज्ञों (जैसे–भास्कराचार्य, आर्यभट्ट एवं रामानुज) का योगदान।

इकाई– 2– पाठ्यक्रमः निर्माण का सिद्धान्त। पाठ्यक्रम में गणित का स्थान एवं महत्त्व। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर गणित शिक्षण का पाठ्यक्रम। अन्य विद्यालयीय विषयों से गणित शिक्षण का सहसम्बन्ध।

इकाई– 3– गणित शिक्षण की विधियां– व्याख्यान एवं प्रदर्शन विधि, आगमन एवं निगमन विधि, विश्लेषण एवं संश्लेषण विधिः प्रोजेक्ट विधि, अन्वेषण विधि एवं प्रयोगशाला विधि।

इकाई– 4– गणित शिक्षण में प्रभावी अनुदेशन हेतु सहायक सामग्री– महत्त्व एवं प्रकार, निर्माण एवं प्रयोग सावधानियां। मौखिक कार्य, लिखित कार्य, गणित क्लब, गणित प्रयोगशाला एवं गणितीय खेलों का आयोजन।

इकाई– 5– गणित शिक्षण में इकाई योजना और पाठयोजना–महत्त्व एवं निर्माण की प्रक्रिया। अंकगणित, बीजगणित, एवं रेखागणित से सम्बन्धित कुछ प्रकरणों पर पाठयोजना बनाना, गणित शिक्षण आकलन में प्रयुक्त विधियों।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण।
2. पाठ–योजना का निर्माण।
3. गणित परीक्षा पत्र निर्माण।
4. गणितज्ञों पर आधारित निबन्ध लेखन।

अध्येय ग्रन्थ–

1. चड्डा, बी.एन. टीचिंग आफ मैथमैटिक्स, धनपतराय एण्ड सन्स दिल्ली अग्रवाल, एस.एम।
2. मंगल, एस.के, टीचिंग आफ मैथमैटिक्स, प्रकाश ब्रदर्श लुधियाना।
3. श्रीवास्तव एण्ड भटनागर, गणित शिक्षण, रमेश बुक डीपो, जयपुर।
4. सिन्धु, के.एस. टीचिंग आफ मैथमैटिक्स, स्टलिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. मिश्र, डॉ0 मीनाक्षी, गणित शिक्षण, भा.वि.स. जगतगंज, वाराणसी।
6. अरोड़ा, एस. के. हाउ टू टीच मैथमैटिक्स, शान्ता पब्लिशर, हांसीगेट, भिवानी।
7. सक्सेना, आर.पी.करीकुलम एण्ड टीचिंग आफ मैथमैटिक्स,इन सैकण्डरी स्कूल, (एन.सी.ईआर.टी.) नई दिल्ली।

10–5 अर्थशास्त्र–शिक्षण

कोर्स कोड– 125 (5) कुल क्रेडिटस–04

क्रियान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य– छात्राध्यापकों कों–

– अर्थशास्त्र का महत्त्व से परिचित कराना।

–अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित करना।

–व्यावहारिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने योग्य बनाना।

–प्रत्येक व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाना।

–देश की आर्थिक व्यवस्था से परिचित कराना।

पाठ्य–वस्तु (Content) 75 अंक

इकाई– 1– अर्थशास्त्र का अर्थ, परिभाषा, एवं क्षेत्र, अर्थशास्त्र शिक्षण का महत्त्व एवं उद्देश्य, अर्थशास्त्र का अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध।

इकाई– 2– अर्थशास्त्र अध्ययन के विद्यालयीय पाठ्यक्रम निर्माण की आवश्यकता, पाठ्यक्रम निर्माण के मूलभूत सिद्धान्त एवं प्रक्रिया।

इकाई– 3– अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियां– परम्परागत विधिया– पाठ्यपुस्तकविधि, व्याख्यानविधि, प्रश्नोत्तरविधि। आधुनिक शिक्षण विधियां– प्रयोगशालाविधि, योजनाविधि, समस्यासमाधानविधि, आगमन–निगमनविधि, विश्लेषणात्मक–संश्लेषणात्मक विधि समाजीकृत, अभिव्यक्तिविधि, निरीक्षित अध्ययनविधि, वाद–विवाद विधि, डालटन विधि।

इकाई– 4– अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तकः– स्वरूप, उद्देश्य एवं पाठ्यपुस्तक रचना के सिद्धान्त, अर्थशास्त्र में अध्यापक की भूमिका।

इकाई– 5–अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए उपयुक्त दृश्य–श्रव्य उपकरण। अर्थशास्त्र शिक्षण की पाठयोजना।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. किसी अध्यापित विषय पर पाठ्योजना निर्माण करना।
2. अर्थशास्त्र विषय से सम्बन्धित किसी उपविषय को उपयुक्त शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन पाठ का लेखन।

अध्येय ग्रन्थ–

1. शर्मा, बी.एल. एवं सक्सेना, वी.एस. अर्थशास्त्र शिक्षण, चौ0 चरणसिंह विश्वविद्यालय, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ उ0प्र0।
2. टग्रवाल, सुरेश कुमार, अर्थशास्त्र शिक्षण गलगोटिया पब्लिशिंग कं, 64/4, डब्ल्यू, ई.ए. करोलबाग, नई दिल्ली।
3. वर्मा, रामपाल सिंह, अर्थशास्त्र शिक्षण, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ उ0प्र0।
4. सिंह, डॉ. सदन, अर्थशास्त्र शिक्षण पद्धति, भा.विद्या, संस्थान, वाराणसी, उ0प्र0।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम

तृतीय सेमेस्टर

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – तृतीय सैमेस्टर कुल अंक– 600

कुल क्रेडिटस–**24+2***

क्र0सं 0	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिटस	घण्टे / सेमेस्टर
141	विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण		500	20	18 सप्ताह
	बाह्य (योगात्मक मूल्यांकन) –400 आन्तरिक (सरचनात्मक मूल्याकन)–100	संकेन्द्रिक शिक्षणाभ्यास (Core Teaching Practice)	500		18 सप्ताह – शिक्षणाभ्यास
I51	प्रायोगिक – ई.पी.सी. practicum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08 160
i ii iii iV	क्रियात्मक अनुसन्धान आधारित परियोजना विद्यालय आधारित गतिविधियों में प्रतिभाग एवं प्रतिवेदन लेखन सहपाठी कक्षा–शिक्षण निरीक्षण विद्यालय पार्श्वचित्र		40 20 20 20		
152	शैक्षिक गतिविधियां Educational Activities	Compulsory	50	2	= 80 % Attendance
I ii iii iV	स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण। विद्यालय शिक्षकों द्वारा विशिष्ट व्याख्यान क्रीडा एवं खेल–कूद अभिभावक शिक्षक बैठक				

विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण

उद्देश्य–विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक दक्षता का विकास करना है जिसे निम्नलिखित उद्देश्य द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जायेगा।

छात्राध्यापको को–

–वास्तविक विद्यालय परिवेश का अनुभव प्रदान करना।

–विद्यालय गतिधियों से परिचित कराना।

–वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण कार्य का अभ्यास प्रदान करना।

–पाठयोजना अनुसार शिक्षण का अभ्यास प्रदान करना।

–पाठयक्रम में निर्धारित शिक्षण विषयों के शिक्षण में पारंगत कराना।

विद्यालय सम्बद्धता प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्वरूप–

समय अवधि 18 सप्ताह	पाठ्यक्रमीय क्रियायें	छात्राध्यापकों द्वारा कार्य
1 सप्ताह	विद्यालय परिवेश को जानना। –सम्बद्ध विद्यालय के नियमित अध्यापकों के अध्यापन कार्य का अवलोकन। –सम्बद्ध विद्यालय के की गतिविधियों एवं अभिलेखों पर आधारित प्रतिवेदन। –सम्बद्ध विद्यालय के सामुदायिक परिवेश का प्रेक्षण एवं प्रतिवेदन।	प्रेक्षण आख्या
1 सप्ताह	कक्षा शिक्षण अभिमुखिकरण (सम्बद्ध विद्यालय के शिक्षकों एवं अध्यापक प्रशिक्षक के निर्देशन में)	
10 सप्ताह	पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास– उच्च प्राथमिक स्तर–6-8thकक्षा का दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। –विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग।	पाठयोजना **30 (15+15)**
4 सप्ताह 2 सप्ताह 2 सप्ताह	क– पाठयोजना आधरित शिक्षण अभ्यास–माध्यमिक स्तर 9-10 th कक्षा – दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। –विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग। या ख– पाठयोजना आधरित शिक्षण अभ्यास–माध्यमिक स्तर 9-10 th कक्षा – दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। – विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग। पाठयोजना आधारित शिक्षण अभ्यास–उच्च माध्यमिक स्तर 11-12 th कक्षा –दो शिक्षण विषयों पर –संस्कृत व अन्य शिक्षण विषय। – विद्यालयीय गतिविधियों में प्रतिभाग।	पाठयोजना **20 (10+10)** पाठयोजना **10 (5+5)** पाठयोजना **10 (5+5)**
2 सप्ताह	समीक्षा पाठ– –समीक्षा पाठ प्रस्तुतीकरण हेतु अभ्यास। –समीक्षा पाठ मूल्यांकन। –सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण	सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण आधारित प्रतिवेदन

विद्यालय आधारित प्रशिक्षण मूल्यांकन प्रक्रिया स्वरूप

कुल अंक – 600

वह्य परीक्षण (400) योगात्मक मूल्यांकन	आन्तरिक परीक्षण (100) सरचनात्मक मूल्यांकन	प्रायोगिक कार्य (100)
1.संस्कृत शिक्षण विषय– 200 2.अन्य शिक्षण विषय – 200 प्रत्येक शिक्षण विषय परीक्षण हेतु अंक वितरण (क) प्रायोगिक शिक्षण परीक्षण – (100 अंक) (ख) पाठयोजना व अन्य रिर्पोट के आधार पर मूल्यांकन– (50 अंक) (ग) प्रयुक्त शिक्षण सहायक सामग्री (50 अंक)	1. प्रेक्षण आख्या – 10 2. शिक्षणाभ्यास प्रेक्षण– 50 क–6-8 thकक्षा का –30 अंक ख–i-9-10 thकक्षा का –20 अंक या (ख) 9-10 thकक्षा का –10 अंक एवं 11-12 thकक्षा का –20 अंक समीक्षा पाठ क–उच्च माध्यमिक स्तर –20 अंक ख–I माध्यमिक स्तर –20 अंक या ख– ii – माध्यमिक स्तर–10 अंक –उच्च माध्यमिक स्तर –10 अंक	1. विद्यालय आधारित गतिविधियों मे प्रतिभाग एवं प्रतिवेदन लेखन (30 अंक) 2. विद्यालय/ कक्षा आधारित समस्याओं पर आधारित क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना (30 अंक) 3. सहपाठी कक्षा शिक्षण प्रेक्षण आधारित प्रतिवेदन (20 अक) 4. सम्बद्ध विद्यालय पार्श्व चित्र (20 अंक)

कुल पाठ योजना– 50

1. उच्च प्राथमिक स्तर –**6-8 th** – 30 पाठ (15 पाठ/ शिक्षण विषय)
2. (क)माध्यमिक स्तर –**9-10 th** – 10 पाठ (5 पाठ/ शिक्षण विषय)

उच्च माध्यमिक स्तर –**11-12 th** – 10 पाठ (5 पाठ/ शिक्षण विषय)

या

2.माध्यमिक स्तर (9–10 कक्षा) –– 20 पाठ (10 पाठ/ शिक्षण विषय)

कुल समीक्षा पाठ योजना– 04

1. उच्च प्राथमिक स्तर –**6-8 th** – 2 पाठ (1 पाठ/ शिक्षण विषय)
2. माध्यमिक स्तर –**9-10 th** – 1 पाठ (अन्य विद्यालयीय शिक्षण विषय)

उच्च माध्यमिक स्तर –**11-12 th** – 1 पाठ (संस्कृत शिक्षण विषय)

या

(2) ख – माध्यमिक स्तर (9–10 कक्षा) –– 2 पाठ (1 पाठ/ शिक्षण विषय)

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) पाठ्यक्रम

चतुर्थ सेमेस्टर

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम

चतुर्थ सैमेस्टर कुल अंक– 600 कुल क्रेडिट्स–**24+2 ***

क्र0सं0	कोर्स	पाठ्यक्रम **Name of course**	कोर्स श्रेणी	कुल अंक	कुल केडिट	घण्टे सप्ताह	घण्टे / सेमेस्टर
		Theoryसैद्धान्तिक		500	20	20	400
161	11	पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4 4	4 4	80 80
162	12	मूल्य शिक्षा एवं व्यावसायिक आचार (Value EducationProfessional Ethics)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
163	13	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग (Aplicationof ICT)		100 75(E)+25(1)	4	4	80
164	14	योग, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (Yoga health & PhysicalEducation)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)	100 75(E)+25(1)	4	4	80
165	15	निम्नलिखि में से कोई एक					
165–1	15–1	(Any one of the following)	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core compulsory)				
165–2	15–2	समावेशित शिक्षा (Inclusive Education)					
165–3	15–3	निर्देशन एवं उपबोधन (Guidznce counseling)					
165–4	15–4	जेन्डर, विद्यालय एवं समाज	संकेन्द्रिक वैकल्पिक (Core Elective)				
165–5	15–5	(Gender, School, Society					
165–6	15–6	शान्ति शिक्षा (Peace education) आर्ट शिक्षा (Art education)					
165–7	15–7	मानवाधिकार शिक्षा (Human rights Education) व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education)					
171		प्रायोगिक – ई.पी.सी. preacticum EPC	संकेन्द्रिक प्रायोगिक– ई.पी.सी.	100	04	08	160
(i)		सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का समीक्षात्मक अवबोध आधारित कार्य		40			
(ii)		विमर्शी संगोष्ठी / शिक्षकों के व्यवसायिक आचार पर आधारित		20			
(iii)		कार्यशाला।		20			
(iv)		विभिन्न आसन / योग / आत्म अवबोध।		20			
		क्षेत्र आधारित सामुदायिक कार्य					
172		शैक्षिक गतिविधियांEducational Activities	**Compulsory**	50	2′	**=80% Attendance**	
(i)		विभागीय पत्रिका					
(ii)		Foundatuon Cours by Woman Studies Center					
(iii)		आर्ट गैलरी का / शैक्षिक भ्रमण।					
(iv)		क्रीडा एवं खेल–कूद।					
(v)		सांस्कृतिक कार्यक्रम					
(vi)		आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण					

11. पर्यावरण– शिक्षा

(Environment Education)

कोर्स कोड – 161 कुल क्रेडिटस – 04

क्रियान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

- पर्यावरणीय शिक्षा की अवधारणा उद्देश्य एवं महत्व का प्राचीन भारतीय परम्परा में निहित पर्यावरणीय दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में अवबोध कराना।
- मानव पर्यावरण सम्बन्ध तथा परितंत्र के संप्रत्यय का अवबोध कराना।
- जैव विविधता के संप्रत्यय एवं महत्व तथा पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रकार, कारण एवं निवाकरण के उपायों से अवगत कराना।
- पर्यावरणीय संरक्षण एवं सुरक्षा में शिक्षकों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं की भूमिका तथा सुस्थिर विकास कि सम्प्रत्यय से अवगता कराना।
- पर्यावरणीय ज्ञान, अभिवृत एवं कौशल में निपुण बनाना।

पाठ्य– वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1 : पर्यावरण शिक्षा – अवधारणा, उद्देश्य, महत्व एवं क्षेत्र। पर्यावरण शिक्षा के उपागम, पर्यावरणीय शिक्षा का अन्य विषयों के साथ सहसंबध । प्राचीन भारतीय परम्परा में पर्यावरणीय दृष्टि, पर्यावरण संरक्षण पर भारतीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन।

इकाई – 2 : मानव एवं पर्यावरण – मानव एवं पर्यावरण के मध्य संबध, परितंत्र – संप्रत्यय, घटक, प्रकार, जैव विविधता –संप्रत्यय एवं महत्व।

इकाई –3 : पर्यावरणीय अवनयनः – प्रकार, कारण – जल, भूमि, वायु, ध्वनि एवं नाभिकीय प्रदूषण के कारण एवं निवारण के उपाय। पर्यावरण एवं स्वास्थ्य, जल संरक्षण एवं Rain water harvesting (वर्षा जल संग्रहण)।

इकाई – 4 : पर्यावरण सुरक्षाः प्राचीन भारतीय सन्दर्भ में पर्यावरण सुरक्षा के उपाय। सुस्थिर विकास, पर्यावरण सुरक्षा संम्बधी कानून एवं आन्दोलन, पर्यावरण संरक्षण हेतु भारत स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण में शिक्षक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका।

इकाई–5 : पर्यावरण' शिक्षा एवं प्रबन्धन – परिस्थितिकी क्लब, शैक्षिक पर्यटन, दृश्य–श्रव्य साधन, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की भूमिका, खेल एवं अनुरूपण। अपशिष्ट प्रबन्धन, अपशिष्ट से ऊर्जा।

सत्रीय कार्य– 25अंक

1. पर्यावरणीय क्लब।
2. स्वच्छता अभियान कक्षा, गृह परिसर तथा आस–पड़ोस।
3. उत्तराखण्ड के परिपेक्ष्य में गौरादेवी का योगदान।

अध्येय ग्रन्थ –

1. सक्सेना, ए.बी. पर्यावरण शिक्षा (शिक्षा के संदर्भ में), आर्यबुक डिपो, दिल्ली।
2. सिंह, सविन्द्र, पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, 20– ए यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
3. इ. गा. रा. मु. विश्व विद्यालय, पर्यावरण और संसाधन ।
4. फेडोरेव, ई. मेन एण्ड. (1980) द इकोलोजिकल क्राअसेज एण्ड सोसल प्रोग्रेस, नेचरप्रोगेरपब्लिशर्स, मास्को
5. रघुवंशी डॉ0 अरूण एवं, पर्यावरण तथा प्रदूषण, म.प्र. हिंदी ग्रन्थ अकादमी, चन्द्रलेखा भोपाल।
6. यूनेस्को (1977) ट्रेन्ड्स इन इनवायरमेन्टल एजूकेशन, यूनेस्को, पेरिस ।

12 . मूल्य शिक्षा एवं व्यावसायिक आचार

(**Value Education & Professional Ethics)**

कोर्स कोड – 162 कुल क्रेडिटस – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

– मूल्य शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता से परिचित कराना।

– मूल्यों के वर्गीकरण से अवगत कराना।

– मूल्य शिक्षण की विभिन्न विधियों के प्रयोग में सक्षम बनाना।

– व्यक्तित्व विकास में मूल्य शिक्षा के माध्यम से व्यावसायिक प्रतिबद्धता विकसित करना।

पाठ्य – वस्तु (**Content**) 75 अंक

इकाई–1 : मूल्य शिक्षा – स्वरूप , उद्देश्य तथा मूल्य परक शिक्षा का विकास, मानवीय मूल्यों की अवधारणा की आवश्यकता, उद्देश्य तथा महत्व, शिक्षा नीतियों में मूल्य शिक्षा

।

इकाई–2 : मूल्यों का वर्गीकरण – शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक, आध्यत्मिक मूल्य सन्दर्भ में ।

इकाई–3 : मूल्य शिक्षा की विधियां – मूल्यों का आभ्यान्तरीकरण – विद्यालयी विषयों, पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा, भूमिका निर्वहन, मूल्य स्पष्टीकरण एवं विश्लेषण, कहानी प्रस्तुतीकरण तथा चर्चा विधि।

इकाई–4 : व्यक्तित्व विकास में मूल्य शिक्षा – आत्मबोध, आत्मविश्लेषण तथा अन्तदर्शन, आत्मनियंत्रण, धैर्य, त्याग, रचनात्मकता, परोपकारिता, जेन्डर समानता के प्रति संवेदीकरण तथा वैज्ञानिक दृष्टि। शिक्षक के लिए व्यावसायिक आचार

इकाई–5: राष्ट्रीय तथा वैश्विक विकास में मूल्य शिक्षा – राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य, संवैधानिक मूल्य जनतात्रिक, समाजवादी, धर्मनिरपेक्षता, समानता, न्याय, स्वतन्त्रता तथा विश्व बन्धुत्व । राष्ट्रीय एकीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में मूल्यपरक शिक्षा की भूमिका।

सत्रीय कार्य– कोई दो 25 अंक

1. पाठ्य पुस्तकों में निहित मूल्यों का विश्लेषण आधारित प्रस्तुतीकरण।
2. मूल्य सम्बन्धित ग्रन्थावलोकन आधारित प्रस्तुतीकरण।
3. भूमिका निर्वहन मूल्य आधारित समस्याओं पर ।

अध्येय ग्रन्थ–

1. पाण्डेय ,के.पी. (2005) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविररद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. जैश्री, मूल्य, (2008) पर्यावरण और मानव अधिकार की शिक्षा, शिप्रा प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, नई दिल्ली।
3. गुप्त, नत्थूलाल, (2005) मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. चतुर्वेदी, रश्मि, खण्डाई, हेमन्त, (2011) मूल्य शिक्षा, ए0 पी0 एच0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली।
5. झा, नागेन्द्र, (2012) प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा पद्धति, अभिषेक प्रकाशन, पीतमपुरा।
6. पाठक, आर0 पी0, (2011) प्राचीन भारतीय शिक्षा, कनिष्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

13. सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का अनुप्रयोग
(**Application of ICT**)

कोर्स कोड – 163 कुल क्रेडिटा – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य **(Objectives)** : छात्राध्यापकों को –

– कम्प्यूटर की अवधारणा एवं कार्यप्रणाली से अवगत कराना।

–इन्टरनेट एवं ई–मेल की कार्यविधि एवं शैक्षिक उपयोग से परिरचित कराना।

– कम्प्यूटर आधारित अधिगम की अवधारणाओं से अवगत कराना।

–सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकि एवं सम्प्रेषण के सम्प्रत्यों से परिचित कराना।

– एम0 एस0 ऑफिस से सम्बन्धित शैक्षिक अनुप्रयोग की दक्षताओं का विकास कराना।

पाठ्य वस्तु – (**Course Content**) 75 अंक

इकाई–1: कम्प्यूटर – अभिप्राय; घटक–इनपुट आउटपुट, सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (cpu); कार्यप्रणाली– एप्लीकेशन तथा सिस्टम सॉफ्टवेयर ; कम्प्यूटर नेटवर्क – अभिप्राय, आवश्यकता एवं प्रकार (LAN, MAN&WAN);शैक्षिक उपयोगिता

इकाई–2 : इन्टरनेट – अभिप्राय, कार्यविधि, इन्टरनेट प्रोटोकॉल (फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल FTP एवं फाइल टैक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकॉल FTTP) , शैक्षिक उपयोग ।

ई. मेल– अभिप्राय, कार्यविधि एवं शैक्षिक उपयोग।

इकाई–3–कम्प्यूटर आधारित अधिगम –ई–अधिगम– अभिप्राय, विशेषताएँ, विभिन्न प्रारूप (अवलंब–Support, मिश्रित–Blended,सम्पूर्ण–Complete), शैलियाँ (एसिन्क्रोनस एवं सिन्क्रोनस सम्प्रेषण शैलियाँ) लाभ एवं दोष।

कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन (CAI)–अभिप्राय, मान्यताएं, प्रयुक्त तकनीकि (हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर एवं कोसवेयर), एवं शैक्षिक उपयोग।

कम्प्यूटर प्रबंधित अनुदेशन (CBI)– अभिप्राय एवं शैक्षिक उपयोग।

इकाई – 4 : सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकि – अभिप्राय, प्रकार (परम्परागत एवं आधुनिक), शैक्षिक उपयोगिता।

सम्प्रेषण – अभिप्राय, प्रक्रिया, विभिन्न माध्यम, प्रकार बाधकतत्व ।

टेलिकानफ्रेंसिग – अभिप्राय, प्रकार (ऑडिया, विडियो एवं कम्प्यूटर), लाभ।

इकाई–5– **:** एम0 एस0 ऑफिस – एम0 एस0 वर्ड (M.S. word) अभिप्राय, डाक्यूमेंट विन्डो – (घटक, टूलबार,बटन,स्टेन्डर्ड एवं फार्मेटिंग टूलबार बटन), डाक्यूमेंट (क्रियेट, ओपन एव सेव) , टेक्स्ट (सलेक्ट, एडिट,कट, कॉपी, पेस्ट, फार्मेटिंग)

एम0 एस0 पावर पाइन्ट (M.S. Power Point) अभिप्राय, घटक, स्लाइड निर्माण, अभिकल्पन एवं प्रस्तुतीकरण, शैक्षिक उपयोग।

एम0 एस0 एक्सेल (M.S. Excel) अभिप्राय, घटक, स्प्रेडशीट, वर्कशीट, शैक्षिक उपयोग।

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से दो– 25 अंक

1. दत्त कार्य
2. ई. मेल एवं इन्टरनेट के प्रयोग आधारित प्रायोगिक कार्य ।
3. एम0 एस0 ऑफिस आधारित प्रायोगिक कार्य एवं वाक परीक्षण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. P.K. Sinha and P.Sinha- Foundations of Computing
2. S.Sangamn- Microsoft Office 2000 for Windows
3. मंगल, एस0 के0 एवं मंगल उमा, (2009) शिक्षा तकनीकी, प्रिन्टिस हाल, नई दिल्ली।

14. योग , स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

(Yoga, Health & Physical Education)

कोर्स कोड – 164 कुल क्रेडिटस – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताहकुल अंक –100

उद्देश्य (**objectives**) : छात्राध्यापकों को–

– योग शिक्षा की अवधारणा से अवगत कराते हुए योग की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान कराना।

– बालकों को योगासन, प्राणायामके महत्व को बताते हुए योगसाधना और योग चिकित्सा के महत्व से परिचित कराना।

– अच्छे स्वास्थ्य हेतु संतुलित भोजन तथा व्यायाम की आवश्यकता और उपयोगिता से अवगत कराना।

– शारीरिक शिक्षा की अवधारणा से अवगत कराते हुए उसके मनोवैज्ञानिक पक्षों से परिचित कराना।

– विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के विविध आयामों से परिचित कराना।

पाठ्य – वस्तु (**Course Content**) अंक 75

इकाई – 1 : भारत में योग परम्परा – अवधारणा, योग शिक्षा की आवश्यकता तथा विधियाँ, आयाम। योग की विभिन्न पद्धतियां : ज्ञान, योग, भक्ति योग, कर्म योग, मानवजीवन में इनका उपयोग तथा महत्व।

इकाई – 2 : योगासन एवं प्राणायाम –आसन एवं प्राणायाम का स्वरूप, प्रकार– पवन मुक्तासन, सूक्ष्म व्यायाम, सूर्य नमस्कार, ताटक, धनुशासन, पश्चिमोतान आसन, पदामासन, सर्पासन, गोमुखासन, मकरासन, भूजंगासन, शीर्षासन, ताडासन, अनुलोम विलोम (नाडी शोधन), शीतली, शीतकारी, उज्जयी, भ्रामरी। योग साधना और योग चिकित्सा का जीवन में महत्त्व।

इकाई – 3: स्वास्थ्य शिक्षाः अवधारणा, अच्छे स्वास्थ्य हेतु भोजन का महत्व, भोजन के पोषकतत्वों के कार्य तथा कुपोषण, आमिष एवं निरामिष भोजन, भोजन के मुख्य तत्व, संतुलित आहार। विभिन्न प्रकार के व्यायामों तथा आसनों का स्वास्थ्य के सन्दर्भ में महत्व। आसन सम्बन्धी विकृतियां एवं कारण, निराकरण एवं उपचार।

इकाई– 4: शारीरिक शिक्षा : अवधारणा, उद्देश्य, महत्व एवं क्षेत्र, शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता तथा सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में शारीरिक शिक्षा का स्थान। शारीरिक शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पक्ष– खेल मनोविज्ञान, खेलों में उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा, रूचियां तथा अभिवृत्ति, शिक्षक– छात्र संबंध, खेलभावना तथा आचार संहिता।

इकाई – 5 : विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा : विद्यालयों में खेल – प्रकार (व्यक्तिगत तथा सामूहिक खेल)तथा उनके सामान्य नियम , महत्त्व तथा विद्यालयीय, अन्तर विद्यालयीय, अन्तर वर्गीय, अन्तर सदन, अन्तर विभागीय स्तर पर तथा वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं महत्त्व।

सत्रीय कार्य–निम्नलिखितमेंसेकोई दो। 25 अंक

1. मानव के शारीरिक एवं मानसिक विकास में योग का महत्त्व ।
2. योगासन एवं प्राणायाम पर आधारित प्रस्तुतियाँ।

3. सन्तुलित भोजन सम्बन्धित विविध सामग्रियों पर परियोजना कार्य।
4. विभिन्न आसनों, व्यायामों के चित्र एकत्र करना। चित्र, माडल निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।
5. शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का प्रतिवेदन तैयार करना।

अध्ययन हेतु संदर्भ ग्रन्थ

1. पुरूषार्थी, योगेन्द्र, वेदों में योग विद्या।
2. आत्रेय, शान्ति प्रकाश, योगमनोविज्ञान।
3. मुखर्जी, विश्वनाथ, भारत के महान योगी।
4. शास्त्री, विजयपाल, पातजंल योग विमर्श ।
5. पातजंल योगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर।
6. सिलोड़ी, महेशप्रसाद, योगमृतम।
7. कल्याण योग तत्वांक, गीताप्रेस गोरखपुर।
8. शर्मा, रमा, शारीरिक शिक्षा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
9. शैरी, जी0पी0, स्वास्थ्य शिक्षा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
10. कुमारी शर्मा, हरीशं, योग दीपिका कमला पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–51
11. सुखिया, एस0पी0, विद्यालय प्रशासन, संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
12. वर्मा, रामपाल सिंह, विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
13. वर्मा, के0 के0 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा दीपक पब्लिशर्स, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
14. कौर, मन्जीत, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा दीपक पब्लिशर्स, ग्वालियन (मध्य प्रदेश)

कोर्स कोड – 165 निम्नलिखित में से कोई एक

15 I समावेशित शिक्षा

(**Inclusive Education**)

कोर्स कोड – 165 (**i**) कुल क्रेडिट – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य

– समावेशित शिक्षा के आधुनिक परिप्रेक्ष्य का तर्कधार समझने की योग्यता विकसित करना।

– शिक्षा में समावेशित शिक्षा की अवधारणा का प्रबल आधार खोजने की संवेदनशीलता लाना।

– विशेष संवर्ग के बच्चों की शिक्षा की आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर शैक्षणिक हस्तक्षेपों एवं नवाचारी युक्तियों के अनुप्रयोग की कुशलता विकसित करना ।

– राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट शिक्षा के सन्दर्भ में चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों तथा विकलांगता को दूर करने हेतु सूचना–प्रौद्योगिकी के योगदान से अवगत कराना।

पाठ्य– वस्तु (**content**) 75 अंक

इकाई– 1 : विशिष्ट शिक्षा– अवधारणा, उद्देश्य, प्रकार महत्त्व एवं क्षेत्र। विकलांग बालकों की शिक्षा का विकास।

इकाई– 2 : शैक्षिक इन्टरवेन्शन – एकीकरण की प्रक्रिया, विकलांगता के अनुसार कार्यात्मक योग्यताओं का आकलन।

विकलांगता एवं सहायक सेवाएं संस्थान कक्ष।

इकाई – 3 : पाठ्यक्रम अनुशीलन– अवधारणा, विकलांगता के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम अनुशीलन, पाठ्यसहगामी क्रियाएं एवं संचालन । विकलांगता एवं नवाचार।

इकई – 4 : समावेशित शिक्षा– अवधारणा, उद्देश्य, तत्त्व, महत्त्व, कक्षा शिक्षण विधियां, समावेशित शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान।

इकाई – 5 :विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु संस्थानों का योगदान– राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका, विकलांगता और भारतीय पुनर्वास परिषद, विकलांगता को कम करने लिए सूचना– प्रौद्योगिकी का योगदान।

सत्रीय कार्य : निम्नलिखित में से कोई दो 25 अंक

1. सुविधा वंचित संवर्ग के किन्ही चयनित एक छात्र का व्यष्टि अध्ययन निर्माण।
2. समावेशित शिक्षा की समस्याओं एवं चुनौतियों पर आधारित समूह परिचर्चा एवं प्रतिवेदन निर्माण।
3. विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की स्वयंसेवी संस्था के प्रयासों पर आधारित दत्त कार्य।

अध्येय ग्रन्थ–

1. शर्मा आर0 ए0, (2005) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, लायल बुक डिपो, मेरठ
2. विष्ट, आभा रानी, (1992) विशिष्ट बालक का मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. सिंह बी0 बी0, (1990) विशिष्ट शिक्षा, वैशाली प्रकाशन, गोरखपुर।
4. Gary Thomas And Mark Vaughan, (2004) Inclusive Education- ReadingAnd Refolections'' Bletchley : Open University Press Book And 18.99 pp 215
5. Panda K.G. (2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas publishing House Private Ltd., New Delhi.
6. Peshwaria R, (2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas publishing House Private Ltd., New Delhi.
7. India Vision, The Report of the Committee of India, Planning Commission, 2020 Gpvt. Of India Published Academic Foundation,New Delhi.
8. Thomas G, (1997) Inclusive Schools for An Inclysive Society, British Journal of Special Education
9. Stainback S. and stainback W, (1990) Inclusive Education, Baltimore, Paul Brokers, Puvlishing Company

15 . II निर्देशन एवं उपबोधन

(Guidance& Counselling)

कोर्स कोड – 165 (**ii**) कुल क्रेडिटस – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे– 04 घण्टे/ सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को –

– निर्देशन एवं उपबोधन के मूलभूत तत्वों का कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सम्बन्ध में बोध कराना।
– निर्देशन की प्रक्रिया तथा विभिन्न स्तरों पर निर्देशन कार्यक्रमों के आयोजन से परिचित कराना।
– वृत्ति के विकास सम्बन्धित विभिन्न तत्त्वों से अवगत कराना।
– उपबोधन सेवाओं की प्रविधियों से परिचित कराना।
– निर्देशन एवं उपबोधन में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपादेयता एवं औचित्य से अवगत कराना।

पाठ्य – वस्तु – (**Content**) 75 अंक

इकाई – 1 : निर्देशन – अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य, क्षेत्र, मूलभूत सिद्धान्त, निर्देशन के प्रकार – शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत । निर्देशन तथा परामर्श में अन्तर तथा अन्तर्सम्बन्ध।

इकाई – 2 : निर्देशन की प्रक्रिया तथा विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रम – समूह निर्देशन तथा व्यक्तिगत निर्देशन, निर्देशन की प्रविधियां, बुलेटिन बोर्ड , कक्षावार्ता, वृत्तिक सम्मेलन वृत्तिक प्रदर्शनियां, विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालयों) पर निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन।

इकाई –3 : वृत्तिक विकास – प्रकृति, प्रक्रिया, प्रभावित करने वाले कारक, वृत्तिक विकास में सूचनाओं का एकत्रीकरण तथा प्रसार, स्थानन सेवा से तथा अनुवर्ती सेवा।

इकाई – 4 : उपबोधन – अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य उपबोधन की प्रविधियां – निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक उपबोधन। उपबोधक की भूमिका तथा अच्छे उपबोधक के गुण।

इकाई – 5 : निर्देशन एवं उपबोधन में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षण ।– मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का अर्थ, आवश्यकता तथा उद्देश्य, वर्गीकरण– बुद्धि, व्यक्तित्व, रूचि उपलब्धि तथा अभिक्षमता परीरक्षण, निर्देशन एवं उपबोधन में परीक्षणों एवं परीक्षणेतर विधियों का उपयोग।

सत्रीय कार्य– निम्नलिखित में से कोई दो 25 अंक

1. वृतिक विकास में सूचनाओं के स्रोतों का संकलन तथा प्रस्तुतीकरण।
2. विभिन्न स्तरों पर निर्देशन कार्यक्रमों का अवलोकन तथा प्रस्तुतीकरण।
3. स्थानन सेवाओं की कार्य प्रणाली का अवलोकन ।
4. बुलेटिन बोर्ड बनाना।

अध्येय ग्रन्थ–

1. Jayswal,S.R. (1995) Guidance & Counselling, Prakashan Kendra, Lucknow
2. Traxller, Arthur E. (1957) Techniques, Harper and Brother Publishers N.Y
3. वर्मा आर. पी. एवं उपाध्याय आर. वी., (1995) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
4. Jones. J. (1995)Principlesof Guidance, MC Graw Hill Book Co. N.Y.
5. Kochar, S.K (1984) Guidance and Counselling in Collage and Universities Sterling Publishers Pvt. L.t.d.

15 . III जेंडर विद्यालय एवं समाज

(Guidance school & Society)

कोर्स कोड – 165 (**iii**) कुल क्रेडिटस – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे– 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को –

– माध्यमिक स्तर पर जेन्डर सवंदीकृत शिक्षको का विकास करना।

– शिक्षा के माध्यम से जेन्डर सेवेदीकृत समाज का विकास।

– अन्तर्विषयी उपागम को विकसीत करना।

– शिक्षको मे जेन्डर अनुकूलित दृष्टिकोण को विकसित करना।

– शिक्षकों मे जेन्डर विषमता (स्टीरियो टाइप चिन्तन) को समाप्त करना।

पाठ्य – वस्तु – (**Content**) 75 अंक

इकाई– 1 : जेन्डर अध्ययन से अभिप्राय आवश्यकता एवं क्षेत्र। अध्यापक शिक्षा मे महत्व। जेन्डरर आधारित संकल्पनाएं, लिंग, जेन्डर, पितृसत्ता नारी समता, नारीवादिता, जेन्डर बजटिंग जेंडर स्टीरियों टाइप तथा जेन्डर समावेशित।

इकाई – 2 : महिला शिक्षा, साक्षरता दर तथा लैगिंग अनुपात और इनको प्रभावित करने वाले कारक। महिला सशक्तिकरण, आवधारणा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, संकेत, राष्ट्रीय योजनाएं तथा नीतियां।

इकाई –3 : महिलाओं का योगदान (वर्तमान संदर्भ में) समाज, राजनीति, विज्ञन, तकनीकी, प्रबन्धन में। भारत की प्रसिद्ध महिलाएं एवं उनका योगदान। (भारतीय प्राचीन साहित्य के विशेष सन्दर्भ में)

इकाई – 4 : जेन्डर , राष्ट्र एवं समुदाय। जेडर सेवेदीकरण अवधारणा एवं आवश्यकता, यू.जी.सी की सक्षम योजना।

इकाई – 5 : महिला एवं सूचना माध्यम, महिला एवं वैश्वीकरण, महिला एवं स्वास्थ्य। महिला एवं कानूनी अधिनियम।

सत्रीय कार्य– 25 अंक

1. विद्यालय के विद्यार्थियों या शिक्षको या अन्य कर्मचारियों के जेन्डर संवेदीकरण हेतु विचारों का संकलन।
2. प्राचीन भारतीय साहित्य में से किसी आदर्श महिला का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व तैयार करना।

अध्येय ग्रन्थ –

1. वासु एजुकेशन इन मॉडन इण्डिया (ओरिएण्ड बुक कम्पनी)
2. भगवानदयाल दी डेवलपमेंट ऑफ माडर्न इण्डियन एजूकेशन (ओरियण्ट – लोंगमास)
3. गुप्ता, एस.पी. भारतीय शिक्षा का इतिहास व समस्याएं, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद
4. कबीर, हुमायूं, एजूकेशन इन न्यू इण्डिया
5. रस्तोगी, के.जी. भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं
6. सिंहल, एम.पी. भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएं
7. पाठक, आर. पी. एजूकेशन इन दि एमरजिंग इंडिया, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली
8. सच्चिदानन्द, ए.पी. एवं देवनाथ, आर, आधुनिकशिक्षायाः विकासः नवशिक्षानीतिश्च
9. एन.सी.आर.टी. प्राथमिक शिक्षा में अभिनव प्रयोग
10. मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन, रिपोर्ट ऑफ दि ऐकेण्डरी एजूकेशन

(**IV**) कला शिक्षा

(**Art Education**)

कोर्स कोड – 165 (अ) कुल क्रेडिटस – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को–

– आर्ट शिक्षा में प्रयुक्त महत्वपूर्ण अवधारणाओं का बोध कराना।
– विभिन्न कक्षाओं के लिए इकाई योजना, पाठ योजना तथा वार्षिक योजना निर्माण करने की–क्षमता का विकास करना।
– विद्यालय पाठय्क्रम तथा पाठ्यपुस्तकों के समीक्षात्मक मूल्यांकन का अवबोध कराना।
– उपलब्धि तथा निदानात्मक परीक्षणों के निमार्ण, प्रशासन तथा प्रदत्त विश्लेषण में सक्षम बनाना।
– उपयुक्त दृश्य–श्रब्य सामग्रियों का निर्माण तथा कक्षा में प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग का अवबोध कराना।
– क्षेत्र भ्रमण (field trips) तथा प्रदर्शनियों का आयोजन करना सिखाना ।

पाठ्य – वस्तु (**Content**) अंक 75

इकाई – 1 : कला शिक्षा की प्रकृति, क्षेत्र तथा अवधारणा – कला शिक्षा की संरचना, आवश्यकता तथा विद्यालयी पाठ्यक्रम में इसका स्थान । क्षेत्र, प्रकृति तथा कला की अवधारणा, कला का शैक्षिक मूल्य तथा अन्य विषयों से सम्बन्ध, कला तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, भारतीय कलाकारों का योगदान, कला तथा समाज, भारतीय लोक कथाऐं, सृजनात्मक कला।

इकाई – 2 : कला शिक्षण के अनुदेशनात्मक उद्देश्य तथा प्रविधि – कला शिक्षण के लक्ष्य तथा उद्देश्य, विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर कला शिक्षण तथा सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य, कला के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का विकास, कला शिक्षण के सिद्धान्त, कला शिक्षण की प्रविधियां।

इकाई – 3 : अनूदेशनात्मक सहायक प्रणाली – संसाधन सामग्री, कला का प्रबन्धन तथा संगठन, कला शिक्षण में दृश्य सहायक सामग्री– श्यामपट, कलात्मक वस्तुएं तथा उनका पुनर्निमाण, छायाचित्र तथा अन्य सामग्री, पाठ्य पुस्तकें, कला अध्यापक, कला कक्ष, पाठ्य सहगामी क्रियायें, प्रारम्भिक शिक्षा में सृजनात्मक गतिविधियों का महत्व, कला तथा सामाजिक रूप में उपयोगी कार्य (SUPW) लाइन,रंग, छपाई, सामग्री कठपुतली तथा आवरण (Mask)

इकाई – 4 : कला शिक्षण में नवाचार – दल शिक्षण (Team Teaching) क्षेत्र भ्रमण (Field Trips) सामुदायिक संशाधन संगणक, दूरदर्शन, क्लब, संग्रहालय, विषय प्रयोगशाला, आर्ट गैलरी, प्रदर्शनियां, राजस्थानी लोक कला का सर्वेक्षण, छायाचित्रों का संकलन , कला– चित्र संग्रह पुस्तिका (एलबल) प्राचीन वस्तुएं।

इकाई – 5 : कला शिक्षण की योजना तथा मूल्यांकन – मूल्यांकन की अवधारणा तथा लक्ष्य उद्देश्य तथा प्रक्रिया आधारित मूल्यांकन। अध्यापक निर्मित परीक्षण, विभिन्न प्रकार के प्रश्नों, ब्लूप्रिन्ट तथा पत्र निर्माण, विषयवस्तु विश्लेषण, इकाई योजना, दैनिक पाठ योजना तथा वार्षिक योजना की तैयारी निर्माण, प्रशासन तथा मूल्यांकन।

सत्रीय कार्य–

1. डिजायन, प्राचीन वस्तुएं / अनोखी वस्तुओं का संग्रह
2. प्रदर्शनियों, संग्रहालयों एवं कला कक्ष आधारित प्रतिवेदन लेखन ।

अध्येय ग्रन्थ –

1. Gearge Conard, (1964) The Process of Art education in theelementary school practice hall,, inc England, Cliets NO.1.
2. Ruth Dunneth, (1945) Art and child personality, Methuen and co. ltd, London.
3. Arya jaides, Kala ke adhyapana, Vinod Postak Mandir, Agra.
4. Kiya Shilahak, (1966) Vol.No.4, Special Number, Art Education Published by Department of Education, Rajasthan, Bilaner.
5. AAMS, Memorandum on the teaching of Art London.

15 **vi** मानवाधिकार शिक्षा
(Human Rights Education)

कोर्स कोड – 165 (**vi**) कुल क्रेडिटस – 04

क्रिन्यान्वयन घण्टे – 04 घण्टे / सप्ताह कुल अंक – 100

उद्देश्य : छात्राध्यापकों को –

– भारत में मानवाधिकारों की अवधारणा से परिचित कराना।

–भारतीय तथा अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मनावाधिकारों की प्रति संवेदनशिलता विकसित करना।

–विशिष्ट वर्गों के अधिकारो का अवबोध कराना।

–मानवाधिकरों के सन्दर्भ में राजकीय एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगों की भूमिका तथा कार्य प्रणाली से परिचित कराना।

–मानवाधिकार के लिए कार्यरत्त विभिन्न संस्थाओं की भूमिका से अवगत कराना।

पाठ्य – वस्तु (**Content**)

इकाई – 1 : मानवाधिकार– अवधारणा, आवश्यकता, उद्देश्य, तथा मानवाधिकारो का विकास।

इकाई– 2 : भारतीय तथा अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार– मानवाधिकार सार्वभौमिक घोषणापत्र का परिचय, संविधान में वर्णित अधिकार–समानता, शिक्षा, जीवन, स्वतन्त्रता तथा समान, सामाजिक तथा आर्थिक अधिकार एवं कत्त्वर्य।

इकाई– 3 : विशिष्ट वर्गो के अधिकार– बालकों तथा सुविधा वंचित वर्गो के अधिकार।

इकाई – 4 : भारत में मानवाधिकार सम्बन्धित प्रयास– राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग , राज्य स्तरीय मानवाधिकार आयोग, बालआयोग का सक्षिप्त परिचय एवं कार्यप्रणाली।

इकाई – 5 : मानवाधिकार के लिए कार्यरत्त विभिन्न संस्थायें यू.एन.ओ. , जनसंचार के माध्यम, स्वयसेवी संस्थाएं।

सत्रीय कार्य–कोई दो–

1. सविधान में वर्णित मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पर आधारित प्रस्तुतीकरण।
2. स्वयं सेवी संस्थाओं की मानवाधिकारों जागरूकता में भूमिका।
3. जनसंचार माध्यमों की मानवाधिकारों जागरूकता में भूमिका पर आधारित प्रस्तुतीकरण।
4. विषय सम्बन्धित स्लोगन का एकत्रीकरण तथा प्रस्तुतीकरण।

अध्येय ग्रन्थ–

1. गुप्त नत्थुलाल, (2005) मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन दिल्ली।
2. मौर्या, गीता (2011) मानव अधिकार अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।
3. हूडा राम निवास (2008) मानव अधिकार शिक्षा के0एस0 के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
4. Kaul, Anjana (2011) Human Rights Education, APH Publishing Corporation, New Dehli Bhatt Dalits, (2011) Tribals and Human Rights, Adhyayan Publishers & Distributors, New Dehli.

–

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

शिक्षाशास्त्री (बी0एड0) द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम

तृतीय–सैमेस्टर

क्र0सं0	पाठ्यक्रम **Name of course**			कुल प्राप्तांक सै0 / प्रायो0 **400+100**	कुल केडिटस	घण्टे सप्ताह	
I Pep 121	अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान **Abbcssment and Learing**	**Area A Foundation of Education**	संकेतिक परिप्रेक्ष्य **core compulsry**	100 **80+20**			
124	क्रियात्मक अनुसंन्धान आधारित परियोजना एवं क्रियान्वित	**Area A Foundation of Education**		100 **80+20**			
	समसामायिक भारत एवं शिक्षा			100 **80+20**			
	ज्योतिष शिक्षण **Teaching of Jyotish**			100 **80+20**			
	साहित्य शिक्षण						
	दर्शन शिक्षण **Teaching of**	**Area B Pedago**		**100** **80+20**			
	व्याकरण शिक्षण			100			
II Pep 125	वेद शिक्षण			100			
126	कर्मकान्ड शिक्षण **Teaching of Vayakaran**			100			
127	वेद शिक्षण **Teaching of Ved**			100			
128	कर्मकान्ड **Teaching of Kermkand**			100			
III Pep 111	प्रायोगिक **preactical** (200 अंक)						
1	बाह्य पर्यवेक्षक			100			
2	आन्तरिक			50			

3	कुटीर उद्योग			50			